दूसरी वरीयता के मत वी० वी० गिरि को देने का निश्चय किया, जिसके कारण वी० वी० गिरि राष्ट्रपति हो गये। श्रीमती इन्दिरा गाँधी की यह दोहरी राजनीति काँग्रेस के हाई कमान को पसन्द नहीं आयी और वे काँग्रेस से निष्कासित कर दी गईं। श्रीमती गाँधी ने श्री जगजीवनराम की अध्यक्षता में दूसरी काँग्रेस बना ली। काँग्रेस के इस विभाजन का उत्तर प्रदेश पर विशेष असर पड़ा और दोनों ही काँग्रेस के नेता चौधरी चरणसिंह के पास मिलकर सरकार बनाने के प्रस्ताव लेकर आने लगे।

कानपुर में सन् १९६९ को दिसम्बर में भारतीय क्रांतिदल का प्रदेशीय सम्मेलन श्री चौधरी चरणसिंह की अध्यक्षता में नानाराव पार्क में हुआ। इस सम्मेलन में भारतीय क्रांति दल ने अपनी आर्थिक नीति स्पष्ट की और निर्णय किया कि ग्राम-परक अर्थनीति ही देश को मजबूत बना सकती है। अर्थात कृषि को प्रधानता देकर छोटे-छोटे उद्योगों को गाँव में लगाकर शहरों में बढ़ती हुई आबादी के दबाव को रोका जाय और बेरोजगारी की समस्या को हल किया जाय। ११ फरवरी सन् १९७० को विधान सभा का सत्र प्रारम्भ होने को था। इस अधिवेशन में श्री चन्द्रभानु गुप्त की सरकार का गिर जाना निश्चित हो चुका था। श्रीमती इन्दिरा गाँधी श्री कमलापति त्रिपाठी को मुख्य मन्त्री बनाना चाहती थीं। भारतीय क्रांतिदल की ओर कांग्रेस के दोनों गुटों का झुकाव होने लगा। १० फरवरी को श्री चन्द्रभानु गुप्त ने त्याग पत्र दे दिया और श्री चरणसिंह को मुख्य मन्त्री बनाने के लिए प्रस्तावित किया। उसी समय श्रीमती इन्दिरा गाँधी के प्रतिनिधि श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र लखनऊ आये और उन्होंने चौधरी चरणसिंह से भेंट की और यह सुझाव दिया कि भारतीय क्रांतिदल अपनी सरकार उत्तर प्रदेश में बना ले और इंदिरा कांग्रेस अपना पूरा समर्थन उन्हें देगी। वह चौधरी साहब पर ही छोड़ दिया गया कि वे अपनी आर्थिक नीति के अनुसार प्रदेश का संचालन करें; उनको किसी भी प्रकार का विरोध-व्यवधान उपस्थित नहीं किया जायेगा। चौधरी चरणसिंह १७ फरवरी सन् १९७० को उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री बने और भारतीय क्रांति दल ने इन्दिरा गाँधी की काँग्रेस के समर्थन से अपनी सरकार का गठन किया। मई और जुलाई सन् १९७० में चौधरी चरणसिंह के मन्त्रि मण्डल में इन्दिरा काँग्रेस के मन्त्री सम्मिलित किये गये। उसी समय प्रीवीपर्स को लेकर इन्दिरा कांग्रेस और चौधरी चरणसिंह के बीच मतभेद बढ़ गये। भारतीय क्रांतिदल ने इसे नैतिक अपराध माना कि जिन राजाओं को सरदार पटेल ने एक स्थायी अनुबन्ध के अनुसार प्रीवीपर्स देना स्वीकार किया था, उसे केवल झूठी ख्याति के लिये समाप्त कर दिया जाए। भारतीय क्रांतिदल के राज्य सभा के सदस्यों ने प्रीवीपर्स की समाप्ति के पक्ष में मत नहीं दिया; फलतः इस विधेयक को इतने मत नहीं प्राप्त हो सके जितने कि विधेयक को बनाने के लिये आवश्यक थे। फलतः इन्दिरा काँग्रेस और भारतीय क्रांतिदल में खायी फैलती गई और इन्दिरा काँग्रेस के नेताओं ने लखनऊ में सभायें करके चौधरी चरणसिंह पर आरोप लगाना प्रारम्भ कर दिया। मित्र-घात और चारित्रिक विरोधाभास की यह स्थिति चौधरी चरणसिंह के लिए असह्य थी। यह अजीब विडम्बना थी कि विधान सभा में रहकर जिस पार्टी के लोग मन्त्री बनकर शासन तन्त्र चला रहे थे उसी पार्टी के नेता विधान सभा के बाहर हड़ताल, घेराव, आंदोलन की धमकियाँ दे रहे थे। यहाँ तक कि श्रीमती इन्दिरा गाँधी जब रायबरेली गयीं, तो उन्होंने अपने दल की इस विरोधी प्रवृति को प्रोत्साहित किया। इस स्थिति को देखकर चौधरी चरणसिंह ने मुख्य मन्त्री के रूप में राज्यपाल से सिफारिश की कि मन्त्रियों को तत्काल प्रभाव से हटा दिया जाये। ६ अक्टूबर से विधान सभा का सत्र प्रारम्भ होने वाला था और चौधरी चरण सिंह की यह मान्यता थी कि वह विधान सभा में विश्वास प्राप्त कर लेंगे। इस बीच स्वच्छ राजनीति का स्थान घृणित राजनीति ने ले लिया और इन्दिरा जी ने ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दी कि विधान सभा का सत्र न हो और चौधरी साहब त्याग पत्र दे दें। चौधरी साहब ने त्याग पत्र देने से इन्कार कर दिया और उन्होंने कहा ऐसी कोई स्थिति उत्पन्न नहीं हुई है, जिससे शासन के नियंत्रण में कोई बाधा उत्पन्न हो। इसलिए वे विधान सभा में ही विश्वास प्राप्त करेंगे। राज्यपाल से एक रिपोर्ट मँगाकर केन्द्रीय सरकार ने चौधरी चरणसिंह की सरकार को बर्खास्त करने की अनुशंसा कर दी। राष्ट्रपति उन दिनों रूस, हंगरी आदि देशों की यात्रा पर थे। हवाई जहाज से प्रतिनिधि भेज कर विदेशी भूमि पर किसी प्रदेश की जनतांत्रिक सरकार को बर्खास्त करने के आदेश प्राप्त करने की यह प्रथम ऐतिहासिक घटना थी। आदेश में कहा गया था कि राष्ट्रपति ने अपने विवेक से

स्वयं राज्यपाल की अनुशंसा पर पूर्ण संतुष्टि के पश्चात राज्य के मन्त्रि मण्डल को बरखास्त किया है। विधान सभा का अधिवेशन जो ६ अक्टूबर को होना था, स्थगित कर दिया गया। २ अक्टूबर को श्रीमती गाँधी की राष्ट्रपिता गाँधी के प्रति लोकतन्त्र की हत्या की दिशा में यह अनुपम श्रद्धाञ्जलि थी। मन्त्रि मण्डल भंग कर दिया गया।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी देश के विभिन्न प्रदेशों में राज्य विधान सभा के सदस्यों को धन और पद का प्रलोभन देकर दल-बदल कराकर राज्य सत्ता अपने पास रखना चाहती थीं। श्री चरणसिंह ने उत्तर प्रदेश में श्रीमती गाँधी के अश्वमेध यज्ञ के घोड़े की लगाम पकड़ ली और विभिन्न विरोधी दलों की सहमति से श्री त्रिभुवननारायण सिंह के मन्त्रि-मण्डल का निर्माण करा दिया। एक बार फिर उत्तर प्रदेश में विरोध पक्ष सत्ता में आ गया। राजनीति का चक्र तेजी से घूम रहा था। देश की राजनीतिक हवा का रुख प्रीवी-पर्स की समाप्ति और बैंकों के राष्ट्रीयकरण के प्रचार के कारण श्रीमती गाँधी के पक्ष में मुड़ चुका था। उचित अवसर समझ कर श्रीमती गाँधी ने दिसम्बर, ७० में लोक सभा को भंग कर दिया और मार्च सन् ७१ में चुनावों की घोषणा कर दी। इन चुनावों के पूर्व श्री चरणसिंह चाहते थे कि सभी विरोधी दल अपना अस्तित्व समाप्त कर एक झण्डा, एक मंच, एक निशान पर चुनाव लड़ें, लेकिन विरोधी दलों ने इसे स्वीकार नहीं किया। संगठन काँग्रेस, जनसंघ भारतीय क्रांतिदल, सभी चुनाव लड़े। आपसी फूट का प्रति-फल यह हुआ कि सभी बुरी तरह पराजित हुए और देश ने 'गरीबी हटाओ' के आकर्षक नारे से भ्रमित होकर श्रीमती गाँधी को लोकसभा में भारी बहुमत दे दिया।

शक्ति का दुरुपयोग प्रारम्भ हुआ। विपक्ष में बैठे लोग प्रलोभनों में फँस कर दल-बदल पर उतारू हो गए। विश्व के इतिहास में दल बदल की ऐसी विभीषिका इसके पहले कभी नहीं देखी गई थी। स्वार्थों की आंधी में सत्व उड़ा, फिर सत्य उड़ा, फिर संयम उड़ गया। उत्तर प्रदेश विधान सभा में हुए भारी दल बदल के बल पर कमलापति त्रिपाठी मुख्यमन्त्री बने, काँग्रेस पुनः सत्ता में स्थापित हो गई। किन्तु सन् १९७३ में पी० ए० सी० विद्रोह के कारण विवश श्री कमलापति त्रिपाठी को त्यागपत्र देना पड़ा और राष्ट्रपति शासन लागू किया गया। ८ नवम्बर सन् १९७३ में श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा को उत्तर प्रदेश का मुख्य-मन्त्री बनाया गया। फरवरी सन् १९७४ में विधान सभा के चुनाव हुए। भारतीय क्रांतिदल, मुसलिम मजलिस और सोशलिस्ट पार्टी ने संयुक्त रूप से हलधर चिह्न पर चुनाव लड़ा और इसके १०७ सदस्य चुने गये, सबल विरोधी पक्ष की स्थापना हुई। श्री चरणसिंह जी को जनशक्ति का प्रबल समर्थन मिला, किन्तु वे लगातार प्रयत्नशील रहे कि जब तक समस्त विरोधी पार्टियाँ मिलकर काम नहीं करतीं, तब तक देश का भविष्य उज्ज्वल नहीं हो सकता। उन्होंने दलों की एकता और राजनीतिक ध्रुवीकरण के लिए सभी दलों से कहा। देश की बड़ी-बड़ी विरोधी पार्टियाँ संगठन कांग्रेस और जनसंघ अपने अस्तित्व का विलय करने को तैयार नहीं थी। अतः वे बिन्दु-बिन्दु एकत्रित कर, लोकतांत्रिक निष्ठा की गागर भरने में तल्लीन हो गये। लोकतांत्रिक दल के श्री बलराज मधोक, उत्कल काँग्रेस के नेता श्री बीजू पट-नायक, स्वतन्त्र पार्टी के नेता श्री राजगोपालाचार्य एवं सोशलिस्ट पार्टी के नेता श्री राजनारायण ने चौधरी साहब के उद्देश्य की पवित्रता को पहचाना और पूरा-पूरा साथ देने का वचन दिया। भारतीय क्रांति दल सहित यह पाँच दल सम्पूर्ण निष्ठा से अपने अस्तित्व को तिलाञ्जलि दे एक महान शक्ति में परिवर्तित हो गये। भारतीय लोक दल की स्थापना हुई। देश में एक सशक्त विरोधी मोर्चा स्था-पित हुआ।

सन् १९७४ और सन् १९७५ के प्रारम्भ में गुजरात छात्र आन्दोलन की तरह बिहार में आन्दोलन शुरू हो गया और लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में यह आन्दोलन बढ़ने लगा। सभी पार्टियों ने मिलकर ६ मार्च सन् १९७५ को दिल्ली के लाखों नर-नारियों का एक विराट जुलूस निकाला जिसका नेतृत्व जयप्रकाश नारायण, चौधरी चरणसिंह, प्रकाशसिंह बादल, नानाजी देखमुख और राजनारायण कर रहे थे। 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है' का नारा दिल्ली में ऐसा गूंजा कि सत्ता कांग्रेसी भयभीत हो गये। इस बीच राजनारायण की चुनाव याचिका का फैसला १२ जून को हो गया और हाईकोर्ट इलाहाबाद के जज श्रीजगमोहन लाल ने श्रीमती इन्दिरा गाँधी के रायबरेली में हुए चुनाव निर्वाचन को अवैध घोषित कर

दिया और श्रीमती गाँधी को ६ वर्ष के लिए चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित कर दिया, क्योंकि उन्होंने अपने चुनाव में भ्रष्ट आचरण अपनाए थे। २५ जून को रामलीला मैदान, नई दिल्ली में विशाल जनसभा हुई जिसमें जयप्रकाश नारायण ने श्रीमती इन्दिरा गाँधी से त्यागपत्र की मांग की। इस सभा से भयभीत होकर, अपने हाथ से सत्ता जाते देखकर, श्रीमती गाँधी ने २६ जून सन् १९७५ को आपात्स्थिति घोषित कर दी। सभी शीर्षस्थ नेता २५–२६जून की रात में बन्दी बना लिए गए। समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता छिन गई। तानाशाही का नग्न नृत्य प्रारम्भ हुआ। लाखों देश-भक्त विभिन्न प्रदेशों में बन्दी बनाकर जेल में डाल दिये गये, जिन्हें कानून का दरवाजा खटखटाने का भी अधिकार नहीं था, न वह यही पूछ सकते थे कि उनका दोष क्या है ?

तिहाड़ जेल में बन्द चौधरी साहब दारुण यातना के क्षणों में भी देश की चिन्ता कर रहे थे। विपक्ष का ध्रुवीकरण ही लोकतंत्र बचाने का एक मात्र उपाय था। उन्होंने एक बार फिर विपक्ष के ध्रुवीकरण का प्रस्ताव रक्खा।

नवम्बर सन् १९७५ में जयप्रकाश नारायण मरणासन्न स्थिति में जेल से बाहर कर दिये गये। सत्ता को डर था कि कहीं उनकी मृत्यु जेल में ही न हो जाए। विश्व भर में भारत पर थोपी गयी आपात् स्थिति की भर्त्सना हो रही थी। मार्च सन् १९७६ में चौधरी चरणसिंह को छोड़ दिया गया। बाहर निकलते ही वह विपक्ष की संगठन शक्ति को एकत्रित करने में जुट गये। उनके हितैषी उनसे कहते थे— कुछ दिन शान्त रहिये, मीसा का खूंखार पंजा सामने था। किन्तु चौधरी साहब निर्भय होकर उत्तर प्रदेश विधान सभा के विरोधी दल के नेता का दायित्व निभाते हुए सत्ता की नीतियों की तीव्र आलोचना कर रहे थे। अधिनायकवाद की ओर अग्रसर कांग्रेस की २३ मार्च १९७६ विधान सभा में खड़े होकर लगातार चार घण्टे तक भर्त्सना की।

इसी बीच तानाशाही के भय से खामोश जनता को अपने पक्ष का हामी समझते हुए श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने लोकसभा के चुनाव की घोषणा कर दी और चुनाव के लिए केवल एक माह का समय दिया। वह जानती थीं, विरोधी शक्तियां दलगत दलदल में फँसी हुई हैं, जिसका पूरा फायदा उन्हें मिलेगा और भय के कारण जनता विरोधियों से कतराती रहेगी किन्तु इनका यह स्वप्न छिन्न-विछिन्न हो गया। श्री जयप्रकाश नारायण के प्रबल नेतृत्व ने प्राण शक्ति दी और समस्त विशिष्ट विरोधी दल लोकतन्त्र की रक्षा के लिए एक स्वरूप धारण कर अधिनायकवाद के विरुद्ध निर्भय होकर खड़े हो गये। जनता पार्टी का उदय हुआ। इस ध्रुवीकरण को प्राप्त करने के लिए चौधरी साहब ने अथक प्रयास किया, जो इतिहास में अमर रहेगा। दल की अध्यक्षता श्री मोरार जी को दी गई; जनता को सहारा मिला और जनता, जनता पार्टी को जिताने के लिए पागल होकर बाहर निकल पड़ी। गाँव-गाँव गली-गली लोकतन्त्र की रक्षा के दीवाने अलख जगाने लगे। जन-जन के प्रयास एवं चौधरी साहब की प्रेरणा से सम्पूर्ण उत्तर भारत में काँग्रेस की करारी हार हुई। उत्तर प्रदेश में काँग्रेस को एक भी सीट नहीं प्राप्त हो सकी इसका सम्पूर्ण श्रेय चौधरी चरणसिंह को है।

२४ मार्च १९७७ को सम्पूर्ण जनता पार्टी के नेताओं एवं समस्त लोकसभा सदस्यों ने राजघाट पर सामूहिक रूप से राष्ट्रपिता गाँधी के चरणों में विश्वास एवम् श्रद्धा व्यक्त करते हुए अत्यन्त निष्ठा से देश की सत्ता संभालने का संकल्प लिया। मोरार जी प्रधानमन्त्री बने और चौधरी चरणसिंह गृहमंत्री, अटलबिहारी बाजपेयी विदेशमंत्री बने और जगजीवनराम प्रतिरक्षा–मंत्री। इस अभूतपूर्व स्थिति को देखकर एक बार फिर रामराज्य की कल्पना जनता के मन में हिलोरें लेने लगी। ऐसा लगा, राम की छाया में लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न जागृत होकर देश की बागडोर संभालने में संलग्न हो गये हैं।

आत्म प्रचार से दूर रहने के स्वभाव के कारण ही चौधरी चरणसिंह के व्यक्तित्व का सच्चा स्वरूप आम जनता के सामने नहीं आ पाया है। फलस्वरूप उनके सम्बन्ध में लोग अनेक भ्रान्तियों के शिकार हैं। जनता के सामने उनकी जो तस्वीर बनी है, वह न तो किसी प्रचारतन्त्र की देन है और न सत्ता के चारो ओर मक्खियों की तरह भिनभिनाने वाले दरबारी चाटुकारों की बनाई हुई है। जन-जीवन में शुचिता, राष्ट्र की अर्थ-व्यवस्था में कृषि की प्रधानता, व्यक्तिगत जीवन में अनुशासन एवं मर्यादाओं की महत्ता की

जो व्यवहारिकता चौधरी चरणसिंह के जीवन में देखने को मिलती है, वह आज के राजनीतिक जीवन में दुर्लभ है। आज वह गाँधी दर्शन के प्रतीक के रूप में देश को अनुप्राणित कर रहे हैं।

विनोबा की भाँति वह न तो असंसारी है और न मोरार जी की भाँति गृहस्थ-त्यागी। उनका दावा देवत्व की देहली पर मत्था टेकने का भी नहीं है। वह विशुद्ध मानव हैं और ठोस धरातल के व्यक्ति हैं। आज तीस वर्ष की आजादी के बाद भी देश के कोटि-कोटि लोग जिस स्थिति में हैं, उसे देखते हुए परिलक्षित होता है कि चौधरी साहब का सक्षम निर्देशन ही भारतभूमि पर गाँधी युग को वापस लायेगा।

चौधरी चरणसिंह की आर्थिक नीति के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक है कि देश की गरीबी की रेखा के नीचे की सम्पूर्ण आबादी तथा ग्रामीण जनता को पूरी तरह जाग्रत किया जाये और ग्राम-शक्ति का उदय हो। निहित स्वार्थों और उच्च वर्गीय शहरी चट्टानों को तोड़कर निर्माण की धारा को बाहर निकाला जाय।

●

पृष्टः प्रियहितं ब्रूयात् न ब्रूयादहितं प्रियम्।
अप्रियं वा हितं ब्रूयात्, शृण्वतोऽनुमतो मिथः॥

—चाणक्य

अमात्य आदि राज्य-कर्मचारी पूछे जाने पर राजा को प्रिय और हितकारी बात कह दें। उसे अहितकारी बात, यद्यपि प्रिय हो, न कहें; परन्तु हितकारी बात, यद्यपि अप्रिय हो, अवश्य कह दें। राजा के अनुमति देने पर और ध्यानपूर्वक सुनने पर ही अमात्य अपनी मन्त्रणा दें।

●

अन्तरंग परिचय

□ भास्कर

किसी भी व्यक्ति का अन्तरंग परिचय उसके परिवार से ही प्राप्त होता है। विगत १२ दिसम्बर सन् १९७७ को मुझे चौधरी चरण सिंह के परिवार से मिलने का दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ। भीतरी लान पर मन-भावनी धूप में सहजता, सरलता एवं सोम्यता का स्वरूप श्रीमती गायत्री देवी विराजमान थीं। सहज भाव से मैं उनके पास बैठ गया। अनेक प्रश्नों के घेरे में मैं उन्हें बाँधता रहा और वे सरलता से स्नेह से मुस्करा कर उत्तर देती रहीं। उनके पास अनुभूतियों अनुभवों और संस्मरणों का भरपूर भण्डार है। चौधरी साहब की जीवन-संगिनी के रूप में उन्होंने अनेक उतार चढ़ाव देखे हैं। उनका जीवन, संघर्ष की एक लम्बी गाथा है। जिसका पति राष्ट्र के लिये समर्पित हो, उसके कन्धे पर सम्पूर्ण परिवार का दायित्व समय-समय पर पड़ता रहा और वह उसे गर्व मान कर सहन करती रही हैं। उनकी उदारता एवं सरलता ने उन्हें ममता की मूर्ति बना दिया है। भारत वर्ष की आदर्श माँ उनके प्राणों में पलती है। उन्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे वे अपनी ही माँ हैं। वही निश्छल स्नेह वही सरल सम्बोधन, वही सरल भाव-भंगिमा। ऐसा लगा जैसे मैं अपनी मां के निकट बैठा हूं। मुझे बैठा देखकर उनकी छोटी बेटी शारदा मेरे पास आकर बैठ गयी। शारदा ने अपने अनेक मधुर संस्मरण सुनाते हुये बताया कि वह घर में सबसे छोटी है, अतः उसे माता-पिता का भरपूर प्यार मिला है। बचपन के मधुर क्षणों को याद करते हुये उसने बताया कि पिता जी मुझे बहुत प्यार करते हैं। सभी बच्चों को वे सदैव स्नेह देते रहे हैं और आज भी बच्चों के बीच में बच्चों जैसे बन जाते हैं। उन्हें अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाते हैं, और उनके साथ हंसते हैं, गाते हैं और साथ ही जीवन की शिक्षा भी देते रहते हैं। अनेक महापुरुषों के प्रेरणामय चरित्र सुनाते हैं, जिनसे शिष्टाचार की शिक्षा मिलती हो। बच्चों को सुसन्दर्भ सुनाते रहते हैं। माता जी ने बताया, अपनी बेटियों के लिए उन्हें सुन्दर संस्कार देने के लिए तथा सुशिक्षित करने के लिए चौधरी साहब ने शिष्टाचार शिक्षा पर एक अति श्रेष्ठ पुस्तक लिखी थी जो अभी प्रकाशित नहीं हो पायी है।

शारदा बेटी के बाल्यकाल के संस्मरणों में अपने पिता के व्यस्त जीवन के अनमोल क्षण यत्न से सुरक्षित हैं। जबकि वे प्रातः भ्रमण के लिए जाते हैं रास्ते भर उनको अच्छी अच्छी बातें बताते, कुछ न कुछ शिक्षा देते, हंसते-हंसाते कभी अपना प्रिय गीत 'कदम कदम बढ़ाये जा, खुशी के गीत गाये जा' बच्चों को भी साथ-साथ गाने के लिए कहते और स्वयं भी साथ-साथ गाते। घूमते समय इतना तेज चलते कि बच्चे पीछे रह जाते या भाग-भाग कर उन्हें साथ चलने के लिए विवश होना पड़ता। पिता जी का यह क्रम सदैव जारी रहता। वे बच्चों के लिए महापुरुषों के चरित्र विषयक अच्छी-अच्छी पुस्तकें लाते, उन्हें पढ़ने के लिए देते और बाद में उनसे पूछते कि पुस्तक में उन्होंने क्या पढ़ा? इस प्रकार प्रति क्षण बच्चों के चरित्र निर्माण में उनका ध्यान लगा रहता।

बच्चों के बीच अक्सर अपनी प्रिय कविता सुनाया करते 'बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब

लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।' बच्चों के साथ खेलना और गाना सदैव चलता रहता है। वर्षा ऋतु में मेघ जब झमझम बरसने लगते तो पिता जी का बचपन मचल उठता। वे कपड़े उतार कर वर्षा में नहाने निकल पड़ते। सभी बच्चों को बुला लेते और खूब नहाते। बच्चों के स्वास्थ्य और सफाई की ओर उनका विशेष ध्यान रहता। वे अक्सर स्वच्छ रहने की आदत डालने के लिए प्रेरणामय निर्देश देते रहते हैं।

अपने पिता के सरल और विनोदी स्वभाव के संस्मरण सुनाते हुए बेटी शारदा ने उनके भोजन करने की अद्‌भुत रुचि की भी चर्चा की। उसने बताया कि पिता जी को कभी-कभी एक ही वस्तु खाने की धुन सी लग जाती है। कभी चिल्ले खायेंगे तो चिल्ले ही खाते रहेंगे तो कभी पूड़ियां खायेंगे तो पूड़ियाँ ही बनती रहेंगी। दैनिक जीवन में वह अत्यन्त साधारण भोजन लेने के हामी हैं। भोजन परिवार के साथ ही बैठकर करते हैं।

चौधरी साहब एक नियमित इंसान हैं। इसकी साक्षी घर के बच्चे हैं और आस पास के तमाम लोग हैं। भारत के अधिकतर किसान भाइयों की भांति भारत की आत्मा में बसे कवि कबीर, मीरा, तुलसी के अनेक पद उन्हें गाते हुए प्रायः सुना जा सकता है। आज भी वे मौज में अक्सर भोजन के बाद रात में रस में डूबकर खुले कंठ से गा उठते हैं और सुनने वालो को गीत का भाव तथा अर्थ भी समझाते रहते हैं। भोजन के बाद यह हँसना, गाना अक्सर चलता रहता है। परिवार के साथ बैठकर ताश खेलना ही उनका विशेष मनोरंजन है। आज भी वे भारत के गृह मन्त्री के पद पर भारी दायित्व का भार लेकर दिन भर काम में व्यस्त रहा करते हैं, रात्रि में ८ बजे के बाद पूर्ण विश्राम आवश्यक सा है। रात में वे राजनैतिक पुरुषों की भांति इधर उधर डूबते उतराते नजर नहीं आते। घर में ही बाल-बच्चों के बीच सद्‌गृहस्थ की भांति भरपूर जीवन का आनन्द प्राप्त करते हैं।

बच्चों को अपने पिता पर सचमुच बड़ा गर्व है। उनकी स्नेह-शीलता, निश्छलता और सुस्पष्ट विचारधारा के कारण वे कभी भी किसी के प्रति दुर्भाव एवं दुर्व्यवहार की भावना मन में ला ही नहीं सकते। न्याय और सिद्धान्तों के वह कट्टर पक्षधर हैं परन्तु निर्बल के प्रति उनकी सहृदयता सदा ही भरपूर रही है और है। महिलाओं के प्रति उनके मन में आदर भावना है। उनके प्रति सम्मान प्रकट करते हुए वह अपने सिद्धान्तों और भावनाओं का आग्रह रखते हैं। उनको धोखा देना कठिन है किन्तु फिर भी कभी-कभी वे हंसकर जानबूझकर धोखा खा भी लेते हैं। माता जी ने बताया कि एक दिन किसी व्यक्ति ने चौधरी साहब को सूचना दी कि उनका मित्र उन्हें धोखा देने वाला है। चौधरी साहब ने उत्तर दिया, 'भाई अभी से क्यों परेशान हो, ईश्वर की कृपा है कि अभी तक उसने धोखा दिया नहीं है और फिर धोखा दे भी दे तो क्या अन्तर पड़ेगा ? धोखा देने से धोखा खाना मैं अच्छा मानता हूँ।'

चौधरी साहब को लेकर चौधरी साहब की बेटी, डा० वेद एवं उनके पति डा० जयपाल सिंह से भी वार्ता करने का अवसर प्राप्त हुआ। दोनों ही दिल्ली के मेडिकल इस्टीट्यूट में कार्यरत हैं। अपने पिता और अपने ससुर के सम्बन्ध में दोनों के ही मन कोमल भावनाओं के साथ जुड़े हैं। डा० जयपाल सिंह सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्व और स्पष्ट विचार धारा वाले आधुनिक व्यक्ति हैं। उन्होंने अपने जीवन से सम्बद्ध अपने ससुर श्री चरण सिंह से जुड़े हुए अनेक सस्मरण सुनाये जिसस पता चलता है कि चौधरी साहब का व्यक्तित्व हर तरह से सराहनीय ही नहीं अपितु पूजनीय भी ह। गीता में महापुरुष के लक्षण, स्थितप्रज्ञ का जो वर्णन श्रीकृष्ण जी ने किया वह चौधरी साहब के जीवन में साधना रूप में विकसित हुआ है। बड़ी से बड़ी समस्या आने पर वह शांत और गम्भीर बने रहते हैं। विकट से विकट परिस्थितियों में उन्हें विचलित होत नहीं देखा गया। सहज भाव से समस्या का आकलन करके निर्णय लेते हैं जिसमें समाज और राष्ट्र का हित निहित रहता है। इसी-लिए वह सदैव निश्चिन्त एवं निर्द्वन्द रहते हैं। कभी भी चिन्ता में घुलते हुए उन्हें नहीं देखा गया। वे सदैव जिन्दा दिली और ताजगी से अपने कार्य में संलग्न रहते हैं। डा० जयपाल सिंह ने कहा चौधरी साहब में अपने लोगों के प्रति अत्यन्त समर्पण की भावना है, अपने मित्रों और परिचितों के प्रति वह सदैव चिन्तित रहते हैं। उनका जीवन दोहरी नीतियों पर विश्वास नहीं करता। वे स्पष्ट वक्ता, दृढ़

निश्चयी हैं, अतः कभी-कभी लोगों को गलतफहमी हो जाती है कि वह अत्यन्त कठोर एवं अहंकारी हैं, यह धारणा पूर्ण भ्रान्तिमय है। उनका हृदय कुसुम के समान कोमल और कर्त्तव्य पालन में वज्र की भांति कठोर है।

डा० साहब ने चौधरी साहब के सम्बन्ध में मुख्य बात यह बतायी कि चौधरी साहब कानून को पूर्ण भावना से मानने का आग्रह रखते हैं। उनकी मान्यता है कि कानून सबके भले के लिये है, उसको मानना ही चाहिये। यदि कोई कानून अनुचित लगे तो खुलकर, डटकर उसका विरोध किया जाना चाहिये। कानून और न्याय के मामले में वे राजा विक्रमादित्य के आदर्श को मानते हैं। सबको समान न्याय मिले यही उनका निरन्तर प्रयास है। यही प्रयास उनका सही निर्णय के सम्बन्ध में है। वे यह मानते हैं कि सही निर्णय के लिये सही विवेक आवश्यक है। एक प्रेरणाप्रद प्रसंग इस सन्दर्भ में उन्होंने सुनाया। जब चौधरी साहब जनता पार्टी की सरकार के गृह मन्त्री बनाये गये और इस आवास में रहने आये तो उन्होंने सर्वप्रथम यहां आते ही हवन किया और पूर्णाहुति के बाद पण्डित जी से यही आशीर्वाद मांगा कि जब तक मैं इस स्थान पर रहूं, राष्ट्रहित में सही निर्णय लेने का विवेक मुझमें बना रहे।

इतनी देर में डाक्टर जयपाल सिंह जी से काफी घनिष्टता सी जान पड़ने लगी थी। चाय पीते हुये मैंने उनसे एक दूसरा ही प्रश्न किया 'दूर के लोग जो चौधरी चरण सिंह को नही जानते, अक्सर यह कहते सुने जाते हैं कि श्री चरण सिंह जाट हैं और वे जाटों या जाट जाति के लिये ही सब कुछ करते हैं। वे घोर जातिवादी हैं। इसके सम्बन्ध में आप क्या कहेंगे ?' इस पर डा०साहब हंस पड़े और बोले-'यह आरोप भी खूब रहा। यदि ऐसा होता तो आज बहुत से जाट लोग चौधरी चरण सिंह से नाराज नहीं होते। दरअसल बात यह है कि संकीर्ण विचारधारा वाले और जातीयता के समर्थक लोग ही इस प्रकार के आरोप लगाते हैं जो कि चौधरी चरण सिंह को कतई जानते नहीं अथवा उनके सम्पर्क में कभी आये ही नहीं। अधिकांश राजनीतिज्ञ ईर्ष्या द्वेष के कारण भी अनेक बातें कहते हैं और यह बिल्कुल स्वाभाविक है। जिसका भी हित चौधरी साहब से नहीं हो सका वही विरोधी बातें करने लगे तो आश्चर्य क्या ? बहुत से लोग इसलिए असन्तुष्ट हैं, उन्होंने कहा, कि हमारे लड़के को नौकरी दिला दो या नौकरी की सिफारिश कर दो। चौधरी साहब अयोग्य व्यक्तियों की सिफारिश नहीं कर सके या जातिवाद का झण्डा ऊँचा नहीं कर सके तो वे लोग नाराज तो होंगे ही।'

इस सम्बन्ध में चौधरी साहब बहुत साफ दृष्टिकोण रखते हैं और इसी कारण कभी-कभी जाट जाति के प्रति आग्रह रखने वालों को निरुत्साहित भी करते हैं। पिछले दिनों का प्रसंग था। हरियाणा में उनके रिश्तेदार श्री ओम प्रकाश को कैबिनेट मंत्री का पद देने की बात तय हो चुकी थी। जैसे ही चौधरी साहब को यह विदित हुआ उन्होंने तुरन्त मना कर दिया। क्या इसी तरह कोई जाट पंथी बन सकता है ? इसकी वास्तविकता यह है कि भारतीय जन-समाज में अब तक जो जाति-पांति की संकुचित भावनायें चली आ रही हैं, उन्हीं के अनुसार लोग सबको तौलते हैं और अपने ही आइने में दूसरों की भी सूरत देखने के आदी हैं। विरोधी लोगों के लिए अपनी कुत्सित भावना प्रदर्शन के लिये यह एक और बहाना है। इसको सभी समझदार लोग जानते हैं और चौधरी साहब की उदार, पक्षपात रहित, साफ सुथरी विचारधारा को पहचानते हैं। दरअसल राजनीतिक क्षेत्र में भ्रामक विचारों का प्रचार ही विरोध का सबसे बड़ा अस्त्र होता है। विरोधी इस अस्त्र का प्रयोग जान-बूझकर करते हैं। इसी सन्दर्भ में माता जी ने बताया कि चौधरी साहब के सच्चे मित्र सभी जातियों के रहे हैं। उनके निकट जो लोग पहुँचते हैं वे जाति के आधार पर नहीं, अपने गुण और योग्यता के कारण अभिन्न मित्र बन जाते हैं।

महर्षि दयानन्द और गांधी जी की शिक्षा पर चलने वाले व्यक्ति पर जातिवादी होने का आरोप कितना हास्यास्पद है, कितना मिथ्या है, यह समझदार लोगों से छिपा नही है फिर भी आज की स्वार्थभरी राजनीति में इसका खूब चलन है। जन-साधारण को भुलावे में डालकर इसी तरह के फरेबों से राजगद्दी प्राप्त करने के लिए गोटें बिछायी जाती हैं।

चौधरी चरणसिंह अत्यन्त ही मानवतावादी है। डा० जयपाल सिंह की मान्यता है कि वे इन्सान को इन्सान मानकर सभी से प्रेम, सहानुभूति और सम्मान की भावना से व्यवहार करते हैं।

इसी तरह उनका दिल दिमाग शुरू से बना है। गांधीजी की हरिजन उद्धार की बात ने उनको बहुत प्रभावित किया है। वे शुरू से ही हरिजनों के प्रति विशेष सहानुभूति और सद्भाव रखते आये हैं। इस सन्दर्भ में माता जी ने एक संस्मरण सुनाया। चौधरी साहब के साथ एक भोजन बनाने वाला हरिजन भाई था। नाम था चीतू। इनकी माता जी तो पुरातनपंथी रही होंगी परन्तु परिवार के सभी लोग चौधरी साहब के साथ उसी का बनाया भोजन करते थे। चीतू को आगे चलकर चौधरी साहब ने मिस्त्री की ट्रेनिंग दिलवाकर रोडवेज में नौकरी दिला दी थी। उसका और उसके परिवार वालों का हमारे घर आज भी आना जाना रहता है।

कृषि और ग्राम उद्योगों के प्रबल पक्षधर चौधरी साहब का दृष्टिकोण और उनकी आर्थिक नीति बहुत चर्चा का विषय रही है। कुछ लोग इसकी कटु आलोचना भी करते हैं परन्तु शहर के वासी, राजनीति और अर्थनीति के खिलाड़ी गाँवों से दूर होने के कारण वह सब नहीं देख पाते जो गांधीजी देखते थे और चौधरी साहब देखते हैं और हृदय में अनुभव करते हैं। हमारे देश की लगभग नब्बे प्रतिशत आबादी शहरों में नहीं बल्कि गांवों में रहती है। कृषि ही अपने देश की मुख्य आजीविका है। कृषि के साथ गांवों में यदि छोटे-मोटे उद्योग चलते रहें तो हमारे देश की बहुत बड़ी समस्या का समाधान हो सकता है। बेकारी का बोझ दूर हो सकता है। आर्थिक उलझने और अन्य समस्यायें सुलझ सकती हैं। यह व्यावहारिक बात है। चौधरी साहब इसी पर विश्वास करते हैं, हवाई किले बनाने से देश का भला नहीं होने को है। इसी तरह की योजनायें तो अब तक देश में चलती रहीं जिनसे विषमतायें बढ़ीं और समस्याओं के अम्बार लगे। जब गांवों में लघु उद्योग लगेंगे तो गांवों के लोगों का शहरों की ओर भागना बन्द होगा। नवजवानों की बेकारी दूर होगी। लोगों की आर्थिक स्थिति सुधरेगी। देश का आर्थिक विकास होगा। इस मामले में जापान जैसे छोटे से देश की रीति नीति का उदाहरण हमारे सामने है। हमें उससे सीख लेनी चाहिये।

दूसरी बेटी डा० वेद की जबानी-पिता की कहानी

बातों का यह सिलसिला आगे बढ़ा। डा० वेद ने कुछ मर्म छूने वाली बातें बतायीं जो कि चौधरी साहब की सांस्कृतिक दृष्टि को मुखर करती हैं। भावभीने स्वर में डा० वेद ने अपने पिता की उस शिक्षा का संस्मरण किया जो विवाह के समय ससुराल जाते समय अपनी बेटी को दी थी। उन्होंने मुख्य रूप से तीन बातें कहीं थी –

१- अपने पति से कभी कलह मत करना। कभी क्रोध आये तो उसकी बात का उस समय उत्तर मत देना। बाद में भले ही खूब लड़ झगड़ लेना।

२- पति को अच्छा से अच्छा भोजन बनाकर खिलाना-पिलाना। उसका सदैव ध्यान रखना।

३- सबके खाने के बाद, नौकर-चाकरों को खिलाने के बाद ही स्वयं भोजन करना। सबसे स्नेह करना, सबका सम्मान करना।

भारतीय जीवन की यह दृष्टि कितनी कल्याणमयी है, यह बात यूरोप की सभ्यता में या उससे प्रभावित आधुनिक भारतीय नवयुवकों या नवयुवतियों की समझ में भले ही न आये परन्तु आज यदि सुखी समाज की रचना की जानी है तो उसका मूलाधार यही होगा। दरअसल आज हमारे देश में सुबुद्धि की बड़ी आवश्यकता है जो आधुनिक कही जाने वाली सभ्यता से बहुत दूर है। डा० जयपाल सिंह ने उस दिन की एक बात बतायी। कार में उनको बिठाते हुए किसी बात का उत्तर देते हुए चौधरी साहब बोले, 'भाई इस देश में अक्ल की बड़ी कमी है, खाने की नहीं। कोई भी देश बिना खाये तो जिन्दा रह सकता है लेकिन अक्ल के बिना मर जायगा।'

परिवार नियोजन और छोटे परिवार रखने की बात भी चौधरी चरण सिंह को अच्छी लगती है। वे इसके हिमायती हैं। अपने बेटे-बेटियों को भी इसका उपदेश करते रहते हैं। सबको यही परामर्श देते हैं किन्तु इसमें आत्म-संयम और सुविचार की आवश्यकता है। जोर जबरदस्ती नहीं होनी चाहिये।

माताजी ने कई संस्मरण सुनाते हुये चौधरी साहब की एक कमजोरी की ओर इंगित किया। वे अपने मित्रों के प्रति बहुत अधिक लगाव का अनुभव करते हैं। परिचितों का भी बहुत ध्यान रखते हैं। आन्तरिक आत्मीयता की

गहराइयों में डूब जाते हैं। साथियों का सदैव स्मरण करते हैं। सुख-दुख के साथी आखिर यह मित्रगण ही होते हैं न। उनके मित्रों में जाट नहीं अनेक जातियों के लोग हैं जैसे श्री राजाराम (खत्री अरोरा) अतरौली के बलभद्र सिंह (बुलन्दशहर) विष्णु शरण, दुबलिस। उनके नगर में जायेंगे तो उनसे मिलने जरूर जायेंगे। उनसे सलाह मशविरा करेंगे।

एक आदर्श गृहस्थ

आजकल राजनीतिक पुरुषों का जीवन बड़ा व्यस्त देखा जाता है। रात में देर तक वे सभा सोसाइटी, क्लब या मजलिस में उलझे रहते हैं। घर-परिवार की उनको चिन्ता नहीं। चौधरी साहब इस मामले में बिल्कुल निराले हैं। वे रात आठ बजे के बाद कहीं बाहर नहीं जाते। दिन भर व्यस्त रहने के बाद वह विश्राम चाहते हैं और इसके लिए पारिवारिक भीड़ से अधिक सुख और कहाँ रक्खा है? वे रात ८ बजे के बाद अपने घर परिवार में खो जाते हैं। एक आदर्श गृहस्थ की जिम्मेदारी अनुभव करते हुए वे रात का समय अपने बाल-बच्चों, नाती-पोतों, बेटे-बेटियों के बीच बिताते हैं। उन्हीं के साथ खाना-पीना, हँसना-खेलना, गाना, कथा कहानी कहना, ताश खेलना, चुटकुलेबाजी आदि का दौर चलता रहता है।

डा० वेद ने एक संस्मरण सुनाया। चुनाव के दिनों की बात है। पिताजी दिन भर चुनाव के चक्कर के बाद रात में घर लौटे थे। खा-पीकर लेटे थे कि छोटे बच्चे ने रोना शुरू किया। उसके कान में दर्द था। बच्चे का रोना सुनकर वे सब थकान भूलकर उसको बहलाने और दर्द के इलाज में लग गये। रात के तीन बज गये। जब बच्चे को आराम मिला तभी जाकर सो सके। छोटे बच्चों का उन्हें विशेष ध्यान रहता है। यहाँ तक कि कौन बच्चा रात में कितने बजे सोया, कितनी बार रोया, इस सबकी जानकारी रखते हैं। ऐसी है उनकी पारिवारिक भावना और दायित्व बोध।

उनकी बेटियाँ बतलाती हैं कि जब हम छोटे थे, पिता जी हम सबको सदैव ही कुछ न कुछ सीख दिया करते थे। सादा जीवन, उच्च विचार, आदर्श व्यवहार, सबसे प्रेम और स्नेह की भावना, सेवा की वृत्ति आदि सद्गुणों की शिक्षा वे स्वयं अपने आचरण द्वारा सिखलाते थे। गाँधी जी की तरह स्वयं करके दिखलाने की नसीहत उनका कारगर उपाय था। वे कहते थे कि जैसा व्यवहार आप दूसरों से चाहते हैं पहले वैसा व्यवहार स्वयं करना चाहिये। सत्य बोलने का आग्रह विशेष रूप से रहा, और है। आज भी जब किसी का फोन आता है और पिताजी सामने होते हैं तो कोई भी फोन पर यह नहीं कह सकता कि वे घर पर नहीं हैं। झूठ बोलना उन्हें कतई पसन्द नहीं। सच्चाई पर वे जान देते हैं। अच्छाई और बुराई को भी वे स्पष्ट रूप से बच्चों को समझाते हैं। बचपन में बच्चे प्रश्न करते अच्छाई क्या है और बुराई क्या? पिताजी बताते 'जिस काम को करने में स्वयं ही मन में बुरा लगे वही बुराई है और जो काम मन को भीतर से प्रसन्न करे वही अच्छाई है।'

गाँधी जी का मूल मंत्र 'सादगी' चौधरी साहब के जीवन का अभिन्न अंग रही है, और है। सादा जीवन उनको सदैव भाता है। परिवार के लोगों को भी इसका महत्त्व वे समझाते रहे। साधनहीनों, निर्बलों और गरीबों से उनका लगाव हमेशा रहा है और वे उनके दुःख में भागीदार रहे हैं। इसीलिए वे गरीबों, निर्धनों और साधनहीन लोगों के पक्षधर हैं।

सदैव दूसरों के लिए कुछ करने को तत्पर

दूसरों का ख्याल रखना चौधरी साहब की स्वाभाविक विशेषता है। कहीं भी हों, उनको दूसरों की फिक्र रहती है, अपनी नहीं। आपातकाल में जब जेल में थे—तिहाड़ जेल दिल्ली में उस समय उनको खबर मिली कि उनकी द्वितीय पुत्री डा० वेद के पति डा० जयपाल सिंह को हार्ट की बीमारी हो गयी है। यह सुनकर तुरन्त ही उन्होंने उनके लिए उपाय सोचा। जेल में मीसा के अन्तर्गत मध्य प्रदेश से लाये गये एक अच्छे वैद्य जी भी बन्द थे। उनसे परामर्श करके दामाद को लिखित परामर्श भेजा कि यह आयुर्वेदिक औषधि लें, यह खाओ, यह पिओ, यह सावधानी बरतो आदि। दामाद को उन्हीं की प्रेरणा से चने की रोटी खानी पड़ी। स्वस्थ होने पर जब काफी अर्से बाद डा० जयपाल उनसे मुलाकात करने जेल पहुंचे तो उन्होंने पहले ही कुशल प्रश्न

पूछा–'कैसे हो ?' चौधरी साहब दूसरों से कुशल प्रश्न पहले ही पूछकर हृदय को छू लेते हैं। यह है उनकी आत्मीयता।

परिवार में वे सबसे बड़े हैं, सबके केन्द्र बिन्दु हैं। जब और जहाँ वे रहेंगे वहीं सब परिवार एकत्र हो जाता है। वे नहीं तो सब दूर-दूर, बिखरे-बिखरे। सबको एक सूत्र में रखने वाला उनका आकर्षक व्यक्तित्व है।

चौधरी साहब ७५ वें वर्ष को पार करने पर भी युवा लोगों की भाँति कठिन कार्य भार संभालने में सक्षम हैं। इसके पीछे उनके आरम्भिक जीवन की कर्म साधना है। लड़कियों ने बतलाया कि जब हम छोटे थे तो लखनऊ में देखा करते थे कि पिता जी बड़े सबेरे उठकर चार बजे से ही अपना कार्य शुरू कर देते थे। वही क्रम आज भी है।

उनके जीवन क्रम की साक्षी माता जी ने अपने विवाह के शुरू के दिनों के कई संस्मरण सुनाते हुए बताया कि चौधरी साहब किस प्रकार अपनी रीति-नीति और आचार-व्यवहार के कारण घर-बाहर सभी स्थानों पर सम्मान पाते रहे, यहाँ तक कि उनके पिताजी उनके प्रति आश्वस्त थे और उनको सम्मान की दृष्टि से देखते थे। जब कांग्रेस आन्दोलन में वे कूदे और जेल गये तो पिता जी ने कहा कि उनका बड़ा बेटा कोई गलत काम नहीं करेगा। जो कुछ करता है सोच समझ कर करता है। अपने पुत्र पर उनको अभिमान था। उस जमाने में आजादी की लड़ाई में जो लोग कूदे थे वे अधिकतर अपने जुनून के पक्के साबित हुए। उन्हीं सिरफिरे जवानों की टोली में चरण सिंह जी भी शामिल रहे। आगे चलकर इसी जुनून का रचनात्मक विस्तार हुआ।

आपातस्थिति का पहले से आभास

चौधरी साहब के विशेष व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए परिवार के सदस्यों ने बतलाया कि आपातकाल में वे कैसे अविचलित भाव से सब कुछ बर्दाश्त करते रहे। दृढ़ता से उस संकट का सामना किया। उनकी गिरफ्तारी से पहले की बात है। २४ जून १९७५ को सब लड़के, लड़कियाँ पिता जी के साथ बैठे दशहरी आम खा रहे थे। बीच में वे एकाएक बोल पड़े, 'आज एक पुराना गाना गाने का मन बहुत कर रहा है और गाने लगे 'सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।' बुधवार का दिन था और वे अस्वस्थ थे। २५ जून १९७५ को प्रातः चौधरी साहब उत्तर प्रदेश भवन में बिल्कुल अकेले थे। उसी दिन उनको श्रीमती इन्दिरा गाँधी के निर्देश पर मीसा के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिया गया। परिवार के सब लोग दूर-दूर थे। उनकी गिरफ्तारी की खबर बहुत देर बाद उनको मिल सकी। गिरफ्तारी के समय वे बहुत कमजोर थे। यदि उनको गाड़ी में न ले जाया जाता तो उनके पैरों में पैरालिसिस (लकवा) की बीमारी होने की सम्भावना थी फिर भी वे मजबूत बने रहे, भीतर से, बाहर से भी। कहीं से भी वे टूटे नहीं। उनकी गिरफ्तारी की सूचना पाकर माता जी परेशान तो हुई परन्तु चौधरी साहब के साथ रहने के कारण उनमें भी वही दृढ़ता रही। वे धैर्य की मूर्ति बनीं आपातकाल की अनुभूति के बावजूद अविचलित रहीं। उस समय देश के सभी बड़े-बड़े नेताओं को जेल में डाल दिया गया था। तिहाड़ जेल में जो भी उनसे मिलने जाता, उससे निश्चित समय में ही मुलाकात करते। अधिक समय कभी नहीं चाहा। जेलर के कहने पर भी नहीं। भाई श्याम सिंह से जेल में मिलने से इसीलिये इन्कार कर दिया था कि विधिवत मिलने की स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई थी।

चौधरी साहब के सम्बन्ध में एक रोचक बात यह है कि वैसे तो चौधरी साहब हमेशा अपने विवेक से ही निर्णय करते हैं और वही निर्णय करते हैं जो कि हर दृष्टि से निष्पक्ष हो, सर्वोपरि हित का हो। इसमें वे तटस्थ भाव से ही विचार एवं निर्णय करते हैं। यदि कभी किसी के परामर्श या दबाव से उनके निर्णय पर प्रभाव पड़ा तो बस बेड़ा गर्क। दूसरे की राय लेकर निर्णय किया तो कहीं जरूर कुछ गलत हो गया और जब स्वयं का निर्णय होता है तो कहीं कोई विकार नहीं। कड़े से कड़ा निर्णय लेकर भी वे हृदय से कोमल, उदार और संवेदनशील बने रहते हैं। कटुता या दुराग्रह का लवलेश भी नहीं रहता उनमें।

निकट से चौधरीसाहब को जानने वाले लोग उनके सम्बन्ध में कभी भ्रमित नहीं हो सकते। परन्तु कुछ पीत पत्रकार और विरोधी क्षुद्र हृदय वाले धूर्त राजनीतिज्ञ उनसे ईर्ष्या और

द्वेष के कारण अनर्गल प्रचार किया करते हैं। उनकी तस्वीर उलटी पेश करते हैं। सम्भवतः वे उनके सही निर्णय और अनुशासन की भावना के कारण सदैव विजड़ित और भयभीत रहते हैं। यही कारण है कि वे चौधरी साहब के सम्बन्ध में जन साधारण में भ्रांतियाँ रोपने का कोई अवसर नहीं छोड़ते फिर भी सिंह तो अपनी चाल से चलता ही जायगा।

एक कुशल प्रशासक के रूप में वर्तमान समय में चौधरी चरण सिंह ही देश की नौका के समर्थ कर्णधार हैं इसमें क्या सन्देह ? उन्होंने राजनीतिक जीवन में अपने सिद्धान्तों पर चलकर कीर्तिमान स्थिर किया और उत्तर प्रदेश मंत्रिमण्डल में विभिन्न दायित्वों का सफलता एवं दृढ़ता से निर्वाह किया तथा भारतीय क्रांति दल और भारतीय लोक दल का निर्माण करके देश की राजनीति को एक जबर्दस्त मोड़ दिया। उन्होंने आपातकाल की ज्यादतियों से जूझने वाले सभी दलों को एकता के सूत्र में बांधने की योजना बनायी और जनता पार्टी खड़ी करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। चुनाव चमत्कार के साथ वे भारत सरकार के गृह मंत्री पद पर आसीन हुए। क्या ऐसा प्रभावशाली व्यक्तित्व इतिहास में किसी महापुरुष से पीछे दिखता है ?

भारतीय जन साधारण लोग, निर्बल वर्ग, हरिजन लोग न्याय की आकांक्षा रखने वाले और अनुशासन प्रिय लोग यह महसूस करते हैं कि राष्ट्र की इस संकटापन्न स्थिति में सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसा लौहपुरुष ही राष्ट्र का कर्णधार हो सकता है और चौधरी चरण सिंह सरदार पटेल जैसी कर्मठता, दृढ़ता और प्रशासनिक क्षमता रखते हैं।

●

आदर्श पुरुष

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः समदुखःसुखः क्षमी॥
सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ़निश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥

प्राणी मात्र के लिये जिसके मन में द्वेष उत्पन्न नहीं होता, जो करुणा अर्थात् दया से भरा होता है, जो सम्पूर्ण संसार का मित्र है, जो ममतारहित, अहंकार से विलग होता है, जो सुख-दुःख को समान समझता है, जो क्षमावान रहता है, जो सर्वदा सन्तुष्ट रहता है, जो योगी अर्थात् समचित्त निर्विकार होता है, जो सभी इन्द्रियों को वश में रखता है तथा दृढ़निश्चयी होता है, जिसने, मुझमें अपनी मन-बुद्धि अर्पित कर दी है, ऐसा मेरा भक्त मुझे प्रिय है।

गीता १२/१३–१४

मेरे पिता

□ शारदा

अपने पिता के व्यक्तित्व पर लेखनी उठाने के पहले मैं असमंजस में पड़ गयी हूं कि कहाँ से आरम्भ करूं ? संसार की अनेकानेक बच्चियों की तरह सबसे छोटी बच्ची होने के नाते मेरे पिता का मुझसे और मेरा अपने पिता से अत्यन्त लगाव रहा है। जैसा कि मैंने मनोवैज्ञानिक पुस्तकों में पढ़ा है कि यह लगाव शनैः शनैः उम्र के साथ घटता चलता है किन्तु जितनी भी मेरी आयु बढ़ रही है उतनी ही मैं अपने पिता के आचरण, व्यक्तित्व, भावनाओं एवं व्यवहार में डूबती जा रही हूँ। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण उनके आदर्श, उनका दर्शन मेरे लिए घनी आस्था की वस्तु है। कभी-कभी एहसास करती हूँ कि उनका व्यक्तित्व मेरे जीवन पर अनवरत छाया रहता है कि मैं थकान सी अनुभव करने लगती हूँ। एक पल भी मैं उनके ख्यालों से अपने को अलग कर पाने में असमर्थ पाती हूँ। मेरे पिता साधारण पिता नहीं हैं, वे हमारे गुरू, शिक्षक, पोषक एवम् प्रेरणा के स्रोत हैं। मैं उनकी सबसे छोटी बिटिया हूँ सबसे प्यारी, सबसे दुलारी उनकी प्रत्येक भावना एवं कामना से अभिभूत।

कभी-कभी मुझे ऐसे लगता है कि वह शायद इतने बड़े नहीं हैं जैसा कि मैंने उन्हें अपनी कल्पना शक्ति से बना लिया है किन्तु दूसरे ही क्षण जब मैं उनके पास निकट जा कर बैठती हूँ तो मुझे ऐसा एहसास होता है जैसे मैं किसी मंदिर में बैठी हूं और यही प्रभाव वे अपने प्रत्येक नाते-रिश्तेदार सब बहनों, भाइयों एवं चिर परिचित व्यक्तियों पर छोड़ते हैं जो उनके निकट आते हैं।

अपने पिता की चर्चा करते हुए मुझे कुछ बीते हुए दिन स्पष्ट दिखाई देते हैं। मुझे स्मरण आ रहा है वह समय मेरे बचपन का मधुर समय जब मेरे पिता गर्मियों में सब परिवार सहित नैनीताल जाया करते थे। मेरी माँ वहां पर अधिकतर समय रसोई में बितातीं और हम सब ऊँची ऊँची पहाड़ों की चोटियों पर सैर करने के लिए निकल जाते। उन दिनों पहाड़ों पर इतनी भीड़ नहीं हुआ करती थी। मेरे पिता अपने परिवार के साथ सैर पर निकलने पर हार्दिक आनन्द अनुभव करते। हम सभी बहुत सबेरे भोर होते ही तैयार हो जाया करते थे। बाल सुलभ चंचलता से प्रेरित मैं पोर्च में खड़े होकर सलामी देती और वे उस सलामी को लेने के लिए सीधे तन कर खड़े हो जाते और मेरी सलामी ग्रहण करते। मुझसे कहा करते कि मैं तुम्हें अपना सेक्रेटरी बनाऊंगा और आज मैं यह अनुभव करती हूँ कि यह कोरा मजाक था अथवा यों कहिये कि नादान बच्ची को बहलाने का पिता का सरल सुलभ सहज उपाय था।

अत्यन्त व्यस्त जीवन होने के बावजूद जब कभी हमें पिताजी की आवश्यकता महसूस होती वे हम सबको उपलब्ध होते। जब कभी हम अस्वस्थ होते तो वे अपनी महत्वपूर्ण सभाओं में जाना स्थगित कर हम लोगों के निकट बैठना पसंद करते थे। उनकी सन्निकटता हम बच्चों पर दवा जैसा काम करती और आधी बीमारी उनकी उपस्थिति से ही समाप्त हो जाती। पिता जी वास्तव में अत्यन्त उदार पिता हैं। माँ से अक्सर वह यह बात करते रहते हैं कि यदि मैं माँ होता तो अत्यन्त सफल माँ होता।

मुझे वह दिन भी याद आते हैं जब मेरे पिता हम लोगों के साथ 'कोड़ा जमालशाही' खेला करते थे और हम सब हंसते-हंसते पागल से हो जाते थे। मेरे पिता जीवन से ओत-प्रोत हैं। वे छोटे बच्चों को अत्यन्त प्यार करते हैं। मैं गिन कर तो नहीं बता सकती कि उनके साथ कितने पोते, पोतियों, नातियों, नातिनों ने कुश्ती लड़ी है। अपने पोते, पोतियों के साथ कुश्ती लड़ने में वे हार्दिक आनन्द अनुभव करते हैं। छोटे बच्चों से कभी भी जोर से नहीं बोलते और न उनके चीखने चिल्लाने पर रोष प्रकट करते हैं। बच्चों के बीच बच्चों जैसा बन जाना उनकी विशेषता है। मैं ऐसा महसूस करती हूँ कि वे वास्तविक रूप में सच्चे पिता हैं। उन्होंने केवल आदर्शों की शिक्षा ही नहीं दी बल्कि आदर्शों को जीवन में उतार कर आदर्शमय जीवन जिया है। उनका मन गाँधी जी का अनुयायी है, दयानन्द जी की वाणी उनका धर्म है, उनकी आत्मा में सरदार पटेल जीवित हैं। गाँधी जी व सरदार पटेल के चित्रों के सामने खड़े होकर मैंने उन्हें कई बार आँखों में आंसू और आवाज में अत्यन्त भावुकता भर कर यह कहते सुना है कि यह बहुत जल्दी ही संसार छोड़कर चले गये। अगर यह दोनों जीवित रहे होते तो देश की तस्वीर कुछ और ही रही होती। मेरे पिता जब भी कभी जीवन में ऊब या निराशा का अनुभव करते तो कबीर के भजन गाने लगते। हम लोग भी उनके साथ कबीर के भजन गाया करते। हम सबसे उन्होंने हमेशा यही कहा कि धोखा देने से धोखा खा लेना अधिक अच्छा है। कभी कभी हम ऐसा महसूस करते हैं कि उन्होंने हमें जो भी शिक्षा दी वह आज के युग के लिए व्यावहारिक नहीं है किन्तु जीवन का वही आदि स्रोत, जीवन का वही गौरव, वही सच्चा मूल्य है।

वह अपने देश को अपनी अन्तर आत्मा से प्यार करते हैं। पैसे की, लक्ष्मी की कभी परवाह नहीं की। अपने आदर्शों के समकक्ष अथवा आदर्शों की तुलना में उन्होंने किसी को आड़े नहीं आने दिया। अपना सम्पूर्ण जीवन देश के हित में ही लगाया। आज भी वे एक-एक क्षण अपने देश के लिए ही जी रहे है।

●

दुष्प्रेक्ष्याणां भवत्येव नियमाद्राजभारचताम्।
भाग्यान्त हेमन्तदिने जननेत्रविललंघ्यता॥

—कल्हण

राजा जब तक गद्दी पर रहता है, तब तक उसका दबदबा रहता है। उससे बहुत कठिनाई से मिला जा सकता है। लेकिन जब गद्दी से उतार दिया जाता है तब वह साधारण आदमी जैसा हो जाता है। सब लोग उसको आसानी से देख सकते हैं। जैसे ग्रीष्म काल के सूर्य की ओर देखना कठिन होता है और हेमन्तकाल के सूर्य को देखना सरल।

●

प्रेरणा की धुरी - माता जी

□ मधुकर

सेवा, त्याग, ममत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा से ओत-प्रोत, चौधरी चरणसिंह के संघर्षशील जीवन में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गायत्री देवी प्रेरणा की धुरी बनकर प्रतिष्ठित हैं। वे भारतीय नारी के उन सभी सद्‌गुणों का प्रतिनिधित्व करती हैं जिसके कारण घर की छोटी-सी चहारदीवारी स्वर्ग की महिमा को भी लज्जित करती है। भारतीय राजनीति में विश्व-वंद्य बापू के साथ माता कस्तूरबा की जो भूमिका रही, श्रद्धेय जयप्रकाश जी के कर्मक्षेत्र में स्वर्गीया प्रभावती जी की जो भूमिका रही, ठीक वही भूमिका श्रीमती गायत्री देवी की है। वे उन्हीं के पदचिह्नों का अनुसरण कर रही हैं। सौम्य स्वभाव, सादगीपूर्ण रहन-सहन के अतिरिक्त सब पर अपनी ममता निछावर करने के लिए तत्पर अपनी स्वभावगत विशेषता के फलस्वरूप वे जन-जन में आत्मीयता भरे 'माताजी' के सम्बोधन से पुकारी जाती हैं। छोटे कद की देखने में वे अत्यन्त सीधी-सादी घरेलू महिला हैं। परिचित और अपरिचित सभी आगन्तुकों से वे बड़े अपनत्व और मिठास से वार्तालाप करती हैं। सरलता इतनी कि देखने में सहज विश्वास नहीं होता कि उनका राजनीतिक एवं सार्वजनिक क्षेत्र अत्यन्त व्यापक और विस्तृत है।

हरियाणा के अन्तर्गत सोनीपत तहसील में एक सामान्य कृषक-परिवार की बालिका होने के कारण इस श्रेष्ठ स्थिति में भी वे गरीबों के प्रति स्वाभाविक हमदर्दी रखती हैं क्योंकि वे स्वयम् अभाव और कठिनाइयों के कंटकाकीर्ण पथ से गुजर चुकी हैं। यद्यपि उनकी शिक्षा-दीक्षा तो केवल हाई स्कूल तक ही सीमित रही किन्तु चौधरी साहब से परिणय-सूत्र में आबद्ध उनका सार्वजनिक जीवन ही उनकी उच्च पाठशाला बना। अपने अमूल्य अनुभवों के सक्षम आधार पर वे घर और बाहर दोनों ही स्थानों पर चौधरी साहब का हाथ बँटाती रहती हैं। परिवार पर जब कभी कोई संकट उपस्थित हुआ, माताजी ने बड़े धीरज, सूझ-बूझ और साहस से वह चुनौती स्वीकार की और यही कारण है कि चौधरी साहब उनकी उपस्थिति से पारिवारिक दायित्वों के प्रति सदैव आश्वस्त रहे हैं।

माता जी की मिलनसारिता जन-जन को सहज ही में अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। चौधरी साहब वैसे भी कम बोलते हैं। अपनी तीक्ष्ण स्पष्टवादिता के कारण अधिकांश लोग उनसे अपने स्वार्थ की बात प्रकट करते हुए सकुचाते हैं। इसीलिए आगन्तुकों में से लगभग पचहत्तर प्रतिशत लोग अपने विभिन्न कार्यों के लिए माता जी से ही मिलते हैं। वे हर व्यक्ति के कष्ट-निवारण का भरसक प्रयत्न करती हैं और निराशा की स्थिति में कोई भी व्यक्ति उनके दरवाजे से असन्तुष्ट होकर नहीं लौटता है। माता जी प्रारम्भ ही से सादगी पसन्द महिला रही हैं। वे केवल खादी ही पहनती आयी हैं। भारतीय महिलाओं में संचय की वृत्ति बहुत पायी जाती है किन्तु माता जी इस वृत्ति से बिल्कुल परे हैं। आभूषणों, वस्त्रों और तड़क-भड़क की अन्य वस्तुओं के प्रति उनकी आसक्ति कभी नहीं रही। यही कारण है कि प्रारम्भिक जीवन से आज तक जबकि उनके पति गृह-मंत्री के पद पर आसीन हैं, परिवार के रहन-सहन में कोई परिवर्तन नहीं आया है। उनकी रुचि आडम्बरों से

शून्य है। उनका जीवन विशुद्ध भारतीय नारी के आदर्शों के अनुरूप पूर्णतः एक समर्पित जीवन है। चौधरी साहब की भावनाओं में अपनी भावनाओं को सहज रूप से खपाकर जीना उन्हें बहुत अच्छी तरह आता है।

माता जी के पिता आर्य समाज में गहरी आस्था रखते थे। इधर चौधरी साहब भी आर्य समाज में पक्का विश्वास रखते हैं। अतएव चौधरी-दम्पत्ति का जीवन 'सत्यार्थ प्रकाश' की जीवन-ज्योति से आमुख ज्योतित है। जिन दिनों चौधरी साहब आर्य समाज के अध्यक्ष थे, माता जी महिला शाखा की अध्यक्षा थीं। चौधरी साहब जब 'नमक-सत्याग्रह' में जेल गये तो माता जी भी सत्याग्रह में उनके साथ थीं। वह भी जेल गयीं। माता जी अपना सम्पूर्ण जीवन, समाज-सेवा में समर्पित कर 'अर्धांगिनी' शब्द को चरितार्थ कर रही हैं। चौधरी साहब की प्रत्येक भाव-भंगिमा को वह क्षण भर ही में समझ लेती हैं। यही उनके सुखी गृहस्थ जीवन का मूल-मंत्र है। चौधरी साहब की सत्यनिष्ठा का गुण उन्हें अत्यन्त प्रिय लगता है। वह सदैव उनके व्यक्तिगत गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा करती रहती हैं। चौधरी साहब को अपने हाथ से बनाकर उनकी रुचि का भोजन खिलाती हैं। उनके स्वास्थ्य का प्रतिक्षण ध्यान रखती हैं। पति की सेवा उनके जीवन का प्रमुख दायित्व है। चौधरी साहब की झूठी बुराई सुनकर उनके मन को अत्यधिक क्लेश होता है।

राजनीतिक हथकंडों से प्रभावित पत्रकारिता जब मिथ्या आरोप लगाकर कीचड़ उछालती है तो वे खीझ उठती हैं। उनकी कल्पना में चौधरी साहब संसार के सर्वश्रेष्ठ पुरुष हैं। उन्हें देखकर भारतीय संस्कृति की आधार शिला नारी का सहज एवम् स्वाभाविक रूप स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। सन् १९६९ में मथुरा क्षेत्र से वह उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्या निर्वाचित हुईं। अपने कार्यकाल में जनता का दुःख-दर्द अपना दुःख-दर्द मानकर ही वे निराकरण ढूँढ़ती रहीं—विधान-भवन में जातीं, सभा-समारोहों में भी भाग लेतीं किन्तु चौधरी साहब के निजी कार्य सदैव अपने हाथ ही से करती रहीं। चौधरी साहब का स्थान उनके हृदय में सर्वोपरि रहा। उन्हें अपनी सेवाओं द्वारा सुख देना माताजी के जीवन का चरम उद्देश्य रहा है। वे एक आदर्श गृहणी ही नहीं बल्कि सच्ची सहचरी भी हैं। आपात्काल में जिन दिनों चौधरी साहब जेल में थे, सहानुभूति के रूप में इस कष्ट और संकट की ओर उनका ध्यान दिलाया गया तो उन्होंने कहा—'आज ये लोग समूचे राष्ट्र के लिए कष्ट भोग रहे हैं, इससे किसी व्यक्ति को हतोत्साहित नहीं होना चाहिए। चौधरी साहब जहाँ होंगे, राष्ट्र की चिन्ता के साथ वे परिवार की भी चिन्ता करते होंगे।'

माता जी ने अपने आदर्श व्यक्तित्व की छाप समूचे परिवार पर छोड़ी है। वे अपने पुत्र-पुत्रियों, नाती-पोतों सबको हृदय से प्यार करती हैं। वे समस्त परिवार को बाँधकर चलने वाली महिला हैं। संयम उनके जीवन का सम्बल है। आपात्काल में जब लाखों राष्ट्रप्रेमी सींकचों में बन्द अनगिनत यातनायें भुगत रहे थे, वह स्थान-स्थान पर जेलों में अपने कार्यकर्त्ताओं से भेंट कर 'प्रियप्रवास' की राधा की तरह सबका दुःख बँटाती रहीं, सबको आश्वासन देती रहीं। चौधरी साहब के यशस्वी जीवन में माता जी प्रेरणा की अक्षय-शक्ति बनकर आज भी लोक सेवा के सुदीर्घ पथ पर अनवरत् गतिमान हैं।

●

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता :'

अपराजेय

□ माधवी

मेरे मन पर छायी संस्कारजन्य मौन आस्था ने मुझे सदैव अत्यन्त दूरी रखते हुए चौधरी साहब के व्यक्तित्व के निकट मूक दर्शक, मूक प्रशंसक बनाये रखा। चौधरी साहब की वय मेरे लिए नमन का कारण है, उनका मेरे परिवार से सम्बन्ध मेरी श्रद्धा का पोषक है। उनका दृढ़ निश्चयव्रती चरित्र मेरी आस्था का वैभव है ।

कठिन आदर्शों को जीवन का प्रमुख अंग मान कर निरन्तर संघर्षों से जीवन का श्रंगार करने वाले इस महा-मानव को मैं सदैव दूर से देखती रही हूं। अतः पन्द्रह वर्ष के अटूट अविच्छिन्न सम्बन्ध होते हुए भी सम्भवतः मैंने पन्द्रह वाक्यों की निकटता ही पाई है, किन्तु मुझे जीवन का कोई वह क्षण याद नहीं जब मेरी आस्था को ठेस पहुंची हो।

चौधरी साहब अत्यन्त अल्पभाषी व्यक्ति हैं। लम्बी चौड़ी गाथा विस्तार से कहने की उन्हें आदत नहीं है। सारगर्भित एक अथवा दो वाक्यों में ही वह अपने विचारों को व्यक्त करने की क्षमता रखते हैं। फलतः वाचाल व्यक्तियों के लिए वह कभी-कभी दुरूह हो उठते हैं। आचरण की शुद्धता से जो जन ओत-प्रोत नहीं हैं; वे उनसे भयभीत रहते हैं। भागीरथी के तट पर खड़े होकर जैसे मन का कलुष दृष्टिगोचर होने लगता है, चौधरी साहब की निकटता मनुष्य को आत्म दर्शन के लिए विवश कर देती है। अतः लोग उनसे कतराते रहते हैं और अपने मन की कलुषता को दूर कर पाने में असमर्थ होकर निराशा के गर्त में जा गिरते हैं। मन्दिर में रखी हुई मूर्ति किसी के लिए शंकर है तो किसी के लिये केवल कंकर। किसी भी व्यक्ति को व्यक्तिगत आस्थायें एवं मान्यतायें भिन्न-भिन्न स्व-रूप प्रदान करती हैं।

तुलसी ने कहा:—

'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।'

यही बात यहाँ भी चरितार्थ होती है। कोई बाहर निकलता है तो यह कहते हुए कि "ऐसा तेजस्वी व्यक्ति, स्पष्ट-वक्ता, दृढ़ निश्चयव्रती संसार में दुर्लभ है" तो दूसरा यह कहते हुए निकलता है कि "पूरा जाट है, यह आदमी-महान जिद्दी अपने आगे किसी की नहीं सुनता"। चौधरी साहब के लान के निकट अपनी गाड़ी में बैठे इस प्रकार के अनेक फिकरे मूक श्रोता बनकर मैंने अनेकों बार अवसर सुने हैं। फिकरे कसने वालों में अधिकतर वह लोग होते जो अपने नाते रिश्तेदारों अथवा सगे सम्बन्धियों को उच्च पद दिलाने की अथवा अधिक सुविधायें प्रदान किये जाने की आकांक्षा लेकर आते हैं।

उत्तम चरित्र, उत्तम योग्यता, उत्तम आचरण के तराजू पर तौल कर हर व्यक्ति को अपना बनाने वाले चौधरी साहब हर व्यक्ति को प्रसन्न करने में असमर्थ हो जाते हैं। चरित्र की निरंकुशता उन्हें अत्यन्त अप्रिय है। प्रकृति गुण दोष मय है। हर व्यक्ति में कुछ गुण हैं तो कुछ दोष भी हैं। यह जानते समझते हुए भी उनका मन उन व्यक्तियों से सामञ्जस्य स्थापित नहीं कर पाता जिनके चरित्र में कहीं कोई कमी परिलक्षित होती है।

झूठ से उन्हें हार्दिक घृणा है। राजनीतिक स्तर पर लोग अक्सर झूठ बोलने को नीति के रूप में स्वीकार कर लेते हैं; किन्तु चौधरी साहब के वश की यह बात नहीं कि वह सच्चाई को किसी कारण वश भी ठुकरा सकें। भ्रष्ट आचरण का मूल स्रोत वह ऊँचे लोगों को मानते हैं जिनके जीवन का चरम उत्कर्ष केवल अर्थ की उपलब्धि ही है। उनका यह दावा है कि ऊँचे ओहदों पर बैठे तथा समाज के उच्च वर्ग के लोग यदि अपने आचरण को शुद्ध करलें तो समस्त समाज उनका अनुकरण कर के शुद्ध आचरण युक्त हो सकता है।

उनका यह वाक्य जब भी सुनती हूं गीता का एक कथन याद आता है :–

श्रेष्ठ पुरुष जेहि आचरहिं, तेहि अनुकरहि समाज।
जेहि प्रमाण वे उच्चरहिं, सोइ प्रमाण जग काज।

चौधरी साहब भी यही कहा करते हैं :—"महाजनो ऐन गतः स पन्थः"। इसमें कोई सन्देह नहीं कि संसार जिसे मानता है उसी का अनुकरण करता है। अतः राष्ट्र के सभी उच्च स्थिति पर आसीन व्यक्तियों को अत्यन्त शुद्ध आचरण समाज के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए, ऐसा आचरण जो समस्त मानवता के लिए अनुकरणीय हो।

चौधरी साहब आस्तिक व्यक्ति हैं। वे मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करते। किन्तु परमात्मा में उनका दृढ़ विश्वास है। वैदिक रीति से हवन, उपासना, उनके जीवन का एक अंग है। परमात्मा से वह सदैव शुद्ध आचरण की ओर प्रेरित रहने की ही क्षमता माँगा करते हैं। राष्ट्र निर्माण उनके जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य है। उनके जीवन पर दो महान व्यक्तियों की छाप है। महर्षि दयानन्द और गाँधी जी की। महर्षि दयानन्द उनके विश्वासों, उनकी साधना के प्रतीक हैं तो, गांधी जी उनकी राष्ट्रीय चेतना के प्रेरक हैं। दयानन्द की तरह वह सहज समाज सुधारक तथा गाँधी जी की तरह गाँव के पोषक हैं। गाँव का विकास सम्पूर्ण देश को ऊपर उठायेगा इसी कल्पना को सत्य के शिखर तक पहुंचाने के लिए वह गांव की समृद्धि का स्वप्न देख रहे हैं।

प्रजातन्त्र की परिभाषा को वह सहज रूप में स्वीकार करते हैं। सरकारी पक्ष के साथ साथ राष्ट्र के निर्माण के लिए विरोधी पक्ष का सबल होना अत्यन्त आवश्यक है। यह उनकी स्पष्ट धारणा है। यही कारण है कि काँग्रेस शासन में बढ़ती हुई निरंकुशता को देखकर सशक्त विरोधी दल की कल्पना मात्र से उन्होंने सन् १९६७ में काँग्रेस छोड़ दी। चाहते तो वह कुर्सी से चिपके रह सकते थे किन्तु वे ऐसा नहीं कर सके। एक सच्चे इन्सान की तरह सच्चाई को अपनाना उनकी अपनी आदत है। अनीतिमय आचरण से सांठ गांठ कर पाने में असमर्थ चौधरी साहब राजनीतिक विद्वेषों से पूर्ण मनुष्यों की आँखों में कांटे की तरह चुभते रहते हैं। फलतः जितने मुंह उतनी बातें सुनने को मिलती हैं। बातें अपनी गति से चलती रहती हैं और चौधरी साहब अपनी गति से। अपनी निन्दा वह बड़ी शान्ति से सुनते हैं और काम में जुटे रहते हैं। उनका अपूर्व ज्ञान, अखंड विश्वास, उनकी राष्ट्रीय चेतना उनकी कार्य-क्षमता अपनी लीक पर अलग चल रही है। उनकी कथनी और करनी में पूर्ण सामञ्जस्य है। उनके मन का धीरज हिमालय की तरह ऊँचा है। अनर्गल चर्चाओं में समय को नष्ट करना वह जानते ही नहीं। जिसे स्नेह करते हैं हृदय से करते हैं–जब किसी के प्रति उनके मन में घृणा जाग उठती है तो वह मौन साध लेते हैं। उसकी चर्चा करना भी वह पसन्द नहीं करते।

चौधरी साहब जिस पर विश्वास करते हैं हृदय से विश्वास करते हैं। अनाहूत अपूर्व विश्वास और आज का राजनीतिक स्वार्थों से बिंधा मानव उस विश्वास को अपना राजनीतिक अधिकार समझ कर दिशा भ्रमित हो उठता है। चौधरी साहब के व्यक्तित्व के निकट कई हस्तियाँ मैंने ऐसी देखीं जो उनके विश्वास की छाया में पलकर घोर अहंकार की ऋणी हो गईं और उनका यही अहंकार उनके पतन का कारण हुआ। झूठे प्रलोभन एवं भ्रांतियों में पड़कर लोग उन्हें स्वार्थों की पूर्ति का साधन समझ बैठते हैं; जो वह कभी हो ही नहीं सकते। असंगत पथ ग्रहण कर वह किसी की भी सहायता नहीं कर सकते वह चाहे उनका अपना पुत्र ही क्यों न हो। लोग बिछुड़ जाते हैं, फिर भी उनका विश्वास उनमें अटूट रहता है। अभी हाल की ही घटना है, एक सज्जन उनसे रुष्ट हैं– हमें उस वक्तव्य की आवश्यकता थी जो चौधरी साहब ने आपात-कालीन स्थिति में विधान सभा में दिया था, वह पूरे विश्वास से बोले–"मेरा वह भाषण अमुक

के पास होगा। वह मेरी हर वस्तु बहुत संभाल कर रखता था।" एक ही वाक्य में ममता, बिछुड़ने की पीड़ा और विश्वास तीनों ही उभर कर आ गये। लोग समझते हैं जो आदर्शों के संघर्ष में रत रहते हैं उनके हृदय ही नहीं होता किन्तु यह मेरा अपना अनुभव है वास्तव में वे ही हृदय का शाश्वत मूल्यांकन करना जानते हैं। अपने बिछुड़े हुए मित्रों को वह दैनिक चर्चा में प्रसंगवश सदैव याद करते हैं।

न्याय करते समय वह अत्यन्त कठोर हो उठते हैं। गहन अपराधों के सम्मुख वह 'क्षमा' शब्द को भूल जाते हैं। अभी कुछ दिन पहले लखनऊ में राज्यपाल के निवास स्थान पर एक महिला ने अपने पति की मुक्ति के लिए अनुरोध करते हुए कहा 'मेरे पति ही मेरे परिवार के सम्बल हैं, उनके बिना बच्चे असहाय हो उठे हैं।' चौधरी साहब ने उस महिला से कहा, 'तेरे पति ने किस अपराध की सजा पाई है? उसने बताया 'उन्होंने किसी की हत्या की है।' चौधरी साहब ने उसकी प्रार्थना को नकारते हुए कहा– "बेटी! जब पिता अपराध करता है तो उसके बच्चों को ही दुख भोगना पड़ता है। उस व्यक्ति के परिवार का दुःख सोचो जिसको तेरे पति ने मार दिया है।" यह कह कर वह गाड़ी में बैठ गए। राह चलते दुखियों की बात सुनना फिर न्यायसंगत उत्तर देना, एक साथ उनके अन्दर पिता और गृह-मन्त्री, दो स्वरूप स्पष्ट उभर आये।

इसी प्रकार की एक घटना अप्रैल १९७७ की है–मैं हमेशा की तरह गाड़ी में बैठी थी। मिलने जुलने वालों का तांता लगा था। एक स्त्री के रोने से अचानक सारा वातावरण गम्भीर हो गया। सभी की दृष्टि उस रुदन की ओर आकृष्ट हो गई। अपने पति के कुकृत्यों की वह महिला तड़प-तड़प कर क्षमा मांग रही थी। महिला होने के नाते माता जी का मन द्रवित हो रहा था। घर परिवार के सभी व्यक्ति उसका रोना देखकर व्याकुल हो रहे थे किन्तु किसी का साहस नहीं हो रहा था कि वह चौधरी साहब से इस विषय पर बात-चीत कर सके। इसी समय उनके एक अभिन्न मित्र ने बड़े यत्न से बात रखी "चौधरी साहब, यह स्त्री इस बुरी तरह रो रही है; आखिर इसके पति ने किया क्या है?" चौधरी साहब ने बड़े सहज भाव से उत्तर दिया। "इसका पति पुलिस में था। एक आफिसर ने रुष्ट होकर इसका तबादला कर दिया; इतनी सी बात पर इसके पति को इतना क्रोध आया कि उसने अधिकारी की ग्यारह वर्ष की बच्ची को गायब कर, टुकड़े-टुकड़े कर कुएं में डाल दिया। तुम्हीं बताओ उस निरीह अबोध बालिका का क्या अपराध था? वह व्यक्ति यदि अफसर को मार देता तो मैं उसे उत्तेजनापूर्ण अपराध समझकर इसे फांसी से मुक्ति दे देता किन्तु उसने तो जघन्य अपराध किया है; अक्षम्य अपराध; एक अबोध बच्चे का खून। यदि भारतीय दण्ड संहिता में फाँसी नाम की सजा है तो तुम्हीं बताओ वह फिर किसे दी जानी चाहिए?" सबकी आंखों के सामने अबोध बालिका का चित्र उभर आया और सब मन मसोस कर रह गये।

चौधरी साहब की अपराजेय आत्मा मानव की प्रत्येक दुर्बलता पर विजयिनी है। रुपये का मोल उनके लिये मिट्टी के ठीकरे से बढ़ कर कुछ नहीं जो उन्हें सच्चाई और ईमानदारी से प्राप्त है वही उनका प्राप्य है। चौधरी साहब उन बिरले इंसानों में है जिन्हें रुपये से किसी कीमत पर खरीदा नहीं जा सकता। यही कारण है कि सम्पूर्ण जीवन कठिन परिश्रम करने के उपरान्त भी वह आज तक अपने लिए एक मकान न बनवा सके। जहाँ जन्में थे उसे भी नवीन रूप न दे सके। ईश्वर ने उन्हें अनन्त आत्म-तुष्टि दी है। वह हर हाल में जीना जानते हैं। प्रारम्भ से ही उन्होंने अपने जीवन को उस सादगी में ढाला है कि उन्हें अर्थ का गुलाम बनना ही नहीं पड़ा। अपने समस्त परिवार को भी उन्होंने अत्यन्त सादगी से जीवन यापन करने की शिक्षा दी है। एक बार की बात है, चौधरी साहब उत्तर प्रदेश में मन्त्री हो चुके थे, सभी मंत्रियों के घरों पर सरकार के खर्चे पर कूलर लग रहे थे। चौधरी साहब की बच्ची ने भी कूलर लगवा लिया, देखकर उन्हें अच्छा नहीं लगा। उसे तुरन्त खुलवा कर वापस कर दिया और कहा, "फुटपाथ की तरफ देखो कितने लोग लू में पड़े जीवन काट रहे हैं। हिन्दुस्तान गरीब देश है; हमें यह शोभा नहीं देता।" इस घटना के तुरन्त बाद रुष्ट मन से बच्चों को गांव भेज दिया; उन्हें वहीं गर्मी बितानी पड़ी। उनके शासन में जितना अनुशासन है उससे कहीं अधिक अनुशासन उनके जीवन में है; घर परिवार में है। किसी प्रकार की अशिष्टता वह एक क्षण के लिए भी सहन नहीं कर सकते।

ओजस्वी भारत की कल्पना ओजस्वी युवकों पर निर्भर

है। राष्ट्र का निर्माण एक यज्ञ है जहाँ युवा शक्ति का सामर्थ्य ही यजमान है। सम्पूर्ण देश की प्रगति जिस वर्ग पर आधारित है, उससे शुद्ध संयमित अनुशासनमय आचरण की अपेक्षा करना चौधरी साहब के प्राणों में बसी पितृशक्ति का द्योतक है। हर पिता अपने पुत्र को शीलयुक्त, शक्तियुक्त विवेकयुक्त, श्रमयुक्त एवं ईमानदार देखना चाहता है। चौधरी साहब भी सम्पूर्ण भारत की युवा शक्ति को निर्माण में रत देखने की कामना करते हैं। उन्नत लक्ष्य की प्राप्ति उन्नत चरित्र से सम्भव है, उन्नत चरित्र उन्नत शिक्षा से सम्भव है। बिना सुदृढ़ शिक्षा के देश के निर्माण की कल्पना असम्भव है। अतः चौधरी साहब सदैव यह विचार प्रकट करते रहे हैं कि शिक्षा के क्षणों को नष्ट न किया जाय। व्यक्तित्व निर्माण में निरत पाठशालायें जब राजनीतिक स्वार्थों की आँधी में फंसती है, व्यक्तित्व बिखर जाते हैं। ज्ञान आराधना के क्षण ही वास्तविक साधना के क्षण हैं। इन क्षणों में शिशु का मन जो भी ग्रहण करता हैं वही समस्त जीवन उसके साथ अक्षुण्ण रहता है।

"तमसो मा ज्योतिर्गमय" का सिद्धान्त भी आज के युग में एक झूठे नारों की तरह विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की सजावट की वस्तु बनकर रह गया है। गिरते हुए शिक्षा स्तर की बैचनी चौधरी साहब को उत्पीड़ित करती है, उद्वेलित करती है और वह अति चिंतित हो उठते हैं। देश के सुन्दर भविष्य की कामना करने वाला उनका मन, गाँधी के पथ का अनुयायी हृदय, वर्तमान से उभरती भारत के भविष्य की तस्वीर को अस्त-व्यस्त दिशा विहीन देख कर व्याकुल हो उठता है।

तीव्र छटपटाहट से उभर कर वह चीख उठता है। अनुशासन···अनुशासन···अनुशासन·····

सम्पूर्ण भारत को दिशा विहीन बनाकर, मूर्खता की अग्नि में झोंक कर अपंग बनाकर जो २९ वर्ष तक शासन करते रहे हैं वे चौधरी साहब के एक एक वाक्य से आहत हो उठते हैं। वे जानते हैं युवा शक्ति संघठन जब सत्य के ज्ञान से ओत प्रोत होगा तो ज्योति की असंख्य किरणें उनके उद्देश्यों को नग्न कर देंगी और वे इतिहास को मुंह नहीं दिखा सकेंगे। ऐसे निहित स्वार्थी तत्व युवकों को घेर कर बैठ जाते हैं और पिता-तुल्य मुख से निकली हुई अमृतवाणी को तोड़ मरोड़ कर नये नये नाम देकर शिक्षा के महान उद्देश्य से विचलित कर देते हैं, जुटा देते हैं अवाञ्छनीय आन्दोलनों में जहाँ उनकी शक्ति का ह्रास हो जाता है। शिक्षा प्राप्त करने का मूल्यवान समय निरर्थक थोपे गये आन्दोलनों में नष्ट हो जाता है और हरश्रृंगार के फूल से महकते हुए छात्र प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तित्व शिक्षा के उद्देश्य रूपी वृक्ष से गिरकर एक ही रात में धूल की गोद में आ गिरते हैं।

कच्ची मिट्टी को कितने यत्न से कुम्हार रूप देता है, फिर उसे पकाता है, दृढ़ता प्रदान करता है, वही गति युवा वर्ग के कोमल मन की है। उन्हें सुन्दर, सुघर, सुशिक्षित बनाने के लिए सम्पूर्ण राष्ट्र का मनोयोग आवश्यक है।

चौधरी साहब स्वस्थ आन्दोलनों में विश्वास करते हैं किन्तु वे आन्दोलन जो उद्देश्य से व्यक्ति को विरत कर देते हैं, देखकर दुखी हो उठते हैं।

निर्माण में लगी युवा शक्ति के माथे का पसीना पोंछने में वह गर्व का अनुभव करते हैं। चरित्र की गिरावट उनके मन में तूफान उठा देती है। अतः वाह्य आडम्बरों से वह कभी सामञ्जस्य स्थापित नहीं कर सके। कोई उनके प्रति क्या धारणा बनाता है इसकी चिंता उन्हें कभी नहीं रही, चिंता रही है तो केवल इस बात की कि उनके हाथ से, उनकी कलम से कोई ऐसा कार्य न हो जो जनहित में न हो अथवा देश हित में न हो।

महिलाओं के लिए उनके मन में अत्यधिक सम्मान है। उनकी कल्पना में नारी का स्वरूप दुर्गा है, लक्ष्मी है, सरस्वती है। स्त्री को वह अर्धांगिनी के रूप में श्रेष्ठ समाज के निर्माण की एक कड़ी मानते हैं। पाश्चात्य सभ्यता में स्त्रियों का बेवजह लगाव उन्हें किञ्चित भी रुचिकर नहीं। बापू की कस्तूरबा उनके निकट नारी का सहज सात्विक स्वरूप है। महारानी झाँसी की बीरता के गीत गाना नारी के प्रति उनकी सरल आस्था का द्योतक है। प्रत्येक भारतीय स्त्री पहले माँ है; फिर और कुछ; इस सांस्कृतिक तथ्य को वह स्वीकार करते हैं। इसलिए उन्हें महिलाओं द्वारा अपनाये

गये वह पेशे पसन्द नहीं आते जो नारी की कोमलता मधुरता एवं ममता पर प्रहार करते हों।

चौधरी साहब का कठिन व्यक्तित्व अनन्त कोमलता का ऋणी है। अत्यन्त गम्भीर दिखने वाले चौधरी साहब की प्रकृति अत्यन्त विनोदी है। एक दिन की बात है कि वे सारे इष्ट मित्रों को जुटा कर ताश खेल रहे थे। संविद-सरकार (उत्तर प्रदेश) टूट चुकी थी जिसके वह मुख्य मन्त्री रहे थे। खेलते-खेलते उन्हें गाने की याद आ गई। कहने लगे "अब ताश बन्द करो हम होली गायेंगे।" होली गाने के पहले होली का भाव समझाया। दुर्योधन के कारण पाँडवों को वनवास झेलना पड़ा। जब दुर्योधन से कृष्ण ने कहा 'यह तुमने उचित नहीं किया' तो वह कहता है :–

"मैंने पांडु बहुत समझायो,
मत जाओ वीर बनैले में।
छीलौ घास मोरे घोड़न की,
बसि जाओ भाय तबेले में।"

तत्कालीन राजनीतिक परिप्रेक्ष में यह होली सुन कर सभी हंस पड़े। चौधरी साहब के लिए कहाँ सम्भव था कि वह निरुद्देश्य किसी के तबेले में बस जाँय। किसी की कृपा पर राज्य सुख भोगते रहें।

मुझे याद हो आई गीता की एक अमूल्य पंक्ति :–

"शीतोष्ण सुखदुःखेषु समः संगविवर्जितः" अर्थात्
"सुखदुख जिनहिं एक सम लागे, जिनके चित आसक्ति न जागे।"

ऐसे धैर्यवान स्थितिप्रज्ञ व्यक्तित्व कहां हैं इस युग में; जो आदर्शों की हत्या होते देखकर एक क्षण में सर से ताज उतार कर फेंक देते हों और फिर सहज भाव से अपने जीवन में हंसते हुए खो जाते हों। २ अक्टूबर सन् १९७० की बात है चौधरी साहब कानपुर में खैराबाद आँख के अस्पताल का शिलान्यास करने आये थे। यहीं उन्हें समाचार सुनने को मिला कि विधान सभा भंग हो गई है, राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया है; सुनते ही उन्होंने सरकारी गाड़ी छोड़ दी। ड्राइवर की आँखों में आँसू थे किन्तु चौधरी साहब अत्यन्त शान्त थे। हंसते हुए अपने मित्र की गाड़ी से लखनऊ वापस चले गये। रास्ते भर तत्कालीन परिस्थितियों पर वार्ता करते रहे, हृदय में न किंचित द्वेष था न रोष।

कभी-कभी ऐसा लगता है संत कबीर की वाणी को गुनगुनाने वाला हृदय राजनयिक नहीं किसी फकीर का सुकोमल मन है, जो जीवन के सत्य को पारखी बन कर सहज रूप से वितरित कर रहा है 'आज नहीं कल' कल नहीं तो कोई और कल, यह सिद्ध करके ही रहेगा कि चौधरी साहब सत्य एवं निष्ठा की प्रतिछाया हैं। उन्होंने आसक्ति का नहीं त्याग का वरण किया है। वे बापू के सच्चे अर्थ में अनुयायी है–जिसने उन्हें कबीर की पंक्तियां तन्मयता में झूम कर गाते सुना है; "जब लाद चलेगा बंजारा" वह कैसे भूल सकता है उनकी आत्मा में स्पष्ट उभरे हुए अध्यात्म के अध्याय को।

मानव जब मानवगत कमजोरियों को जीत लेता है, महा-मानव बन जाता है और जब महामानव सत्य के पथ को पहचान कर सत्य निष्ठा से, दृढ़ निश्चय धारण कर निर्भय होकर जीवन के संघर्षों से हंस हंस कर जूझने लगता है तो उसे महात्मा कहते हैं। चौधरी साहब उन विभूतियों में हैं जिन्हें राष्ट्र महात्मा कहकर अनन्त गौरव के साथ अपना विश्वास समर्पित कर सकता है। राष्ट्र की नौका को कठिन तूफान के आलोड़न से बचाकर जो हाथ, उसे किनारे तक लाये हैं, उनमें से दो अत्यन्त कर्मठ शक्तिशाली हाथ चौधरी साहब के हैं; जो शस्य श्यामला धरती के आंगन में सामर्थ्य एवं समृद्धि का बीज बोने का कठिन कार्य कर रहे हैं। सम्पूर्ण राष्ट्र की आंखें उनकी ओर लगी हैं, कुछ राग-मयी, कुछ द्वेषमयी और उनकी अपनी आंखे लगी हैं धरती की ओर जैसे कि सुन्दर सपने को साकार करने के लिए पूर्ण सात्विकता से तत्पर हों।

व्यक्ति

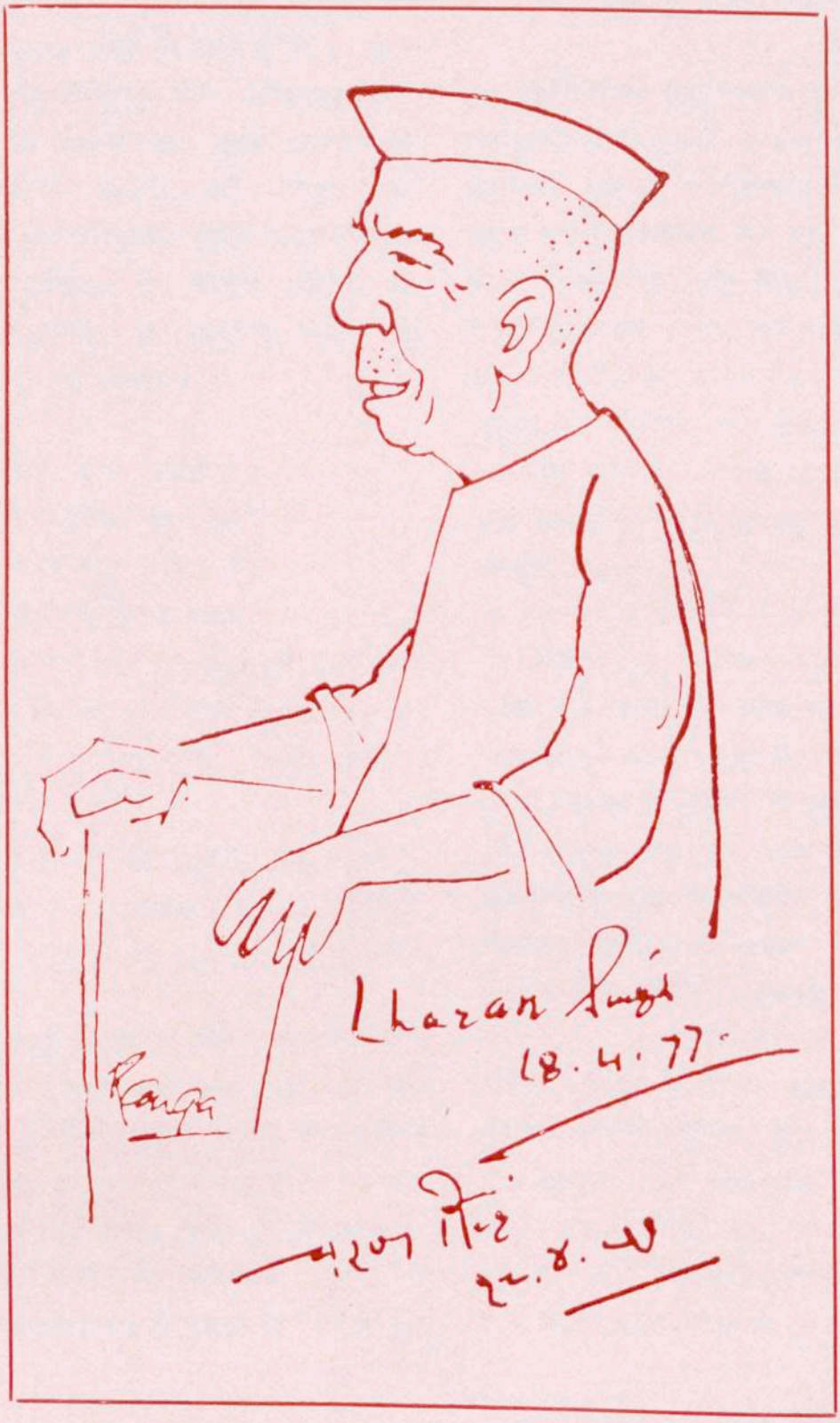
Charan Singh
18.4.77.

उच्चादर्श और कर्मठता के प्रतीक

□ रामनरेश यादव
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

लौहपुरुष चौधरी चरणसिंह भारत माता के ऐसे महान सपूत हैं जिनके रोम-रोम से देशभक्ति और जन-कल्याण की ज्योति फूटती है और जो देशहित के लिये बड़े से बड़ा त्याग करने में तनिक भी आगापीछा नहीं करते। चौधरी साहब विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न एक ऐसे क्रान्तिदर्शी राजनीतिज्ञ हैं जो देश के इतिहास में अपनी दूरदर्शिता, दृढ़ता और ईमानदारी के लिए अमर रहेंगे।

कल्पना कीजिए कि भारत पर अपना शिकंजा मजबूती के साथ कसा रखने के लिए ब्रिटिश सरकार ने जिस जमीदारी प्रथा का कई शतियों में विकास किया था और जो देश के कोटि-कोटि किसानों और गरीबों पर कहर ढा रही थी, उसे समाप्त करने के लिए और वह भी तुरन्त, कितनी विलक्षण बौद्धिक कुशलता की आवश्यकता पड़ी होगी। यह हमारे चौधरी साहब ही थे जिन्होंने अंग्रेजों की कुटिल व्यूह रचना के सबसे मजबूत दुर्ग को अपने एक ही वार में ध्वस्त कर दिया। उनके इस अत्यन्त बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य से देश और विदेश में उनकी प्रशंसा तो हुई ही, साथ ही प्रदेश के लाखों किसानों, गरीबों, शोषितों, दबे-थके तथा सदियों से उत्पीड़ित शोषित और उपेक्षित लोगों के घरों में जिन्दगी की रोशनी फैल गई और लोगों ने आजादी की साँस ली।

चौधरी साहब अपनी स्वतन्त्र चेतना और निर्भीकता के लिए मशहूर हैं। उस समय भी जब बड़े-बड़े देशभक्त कहे जाने वाले लोग कांग्रेस की नीतियों में विश्वास न होने के बावजूद उससे अलग होने का साहस नहीं करते थे क्योंकि वे जानते थे कि कांग्रेस से अलग होने का मतलब राजनीतिक आत्महत्या थी, यह इसी लौह व्यक्ति का जीवट था जिसने कांग्रेस से अलग होकर न केवल उसकी किसान घातक, प्रगति विरोधी नीतियों का विरोध किया बल्कि कांग्रेस के विकल्प में एक सुदृढ़ राजनीतिक दल का संगठन भी किया और तब से चौधरी चरणसिंह किसानों, गरीबों, और दलितों के असन्दिग्ध नेता और रहनुमा बन गये। जनता को यह स्पष्ट आभास हो गया कि कांग्रेस की अभिजात्य वर्गीय हुकूमत और धांधागर्दी से उबारने के लिए चौधरी साहब की निश्छल ईमानदारी और रहनुमाई के अलावा और कोई विकल्प नहीं है। कांग्रेस की तूफानी अन्धभक्ति के विरुद्ध चट्टान की तरह अविचलित यह चौधरी साहब का ही आत्म-विश्वास था, कर्मठता एवं कुशलता थी कि उनका नवगठित भारतीय क्रान्ति दल प्रदेश के राजनीतिक गगन में एक अपूर्व दैदीप्यमान नक्षत्र की भाँति ऐसा चमका कि उसके नेता चौधरी साहब को एक नहीं दो-दो बार राज्य का मुख्यमंत्री पद सम्भालने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

महात्मा गांधी की भाँति गांवों की खुशहाली के रहनुमा हमारे केन्द्रीय गृह मंत्री चौधरी साहब का विश्वास है कि गाँवों के विकास के बिना देश का विकास नहीं हो सकता। उनकी मान्यता है और समय की कसौटी पर वह खरी भी उतरी है, कि गाँवों के विकास के लिए अधिकारतन्त्र गाँव निवासियों के हाथ में होना आवश्यक है क्योंकि शहरी

वर्गों से उभरे देश के नेतृत्व में देश की ८० फीसदी ग्रामीण जनता की परिस्थितियों की न तो सही अनुभूति होती है और न उसमें वह सम्वेदनशीलता पायी जाती है जो गाँवों के किसानों, मजदूरों, कारीगरों और गरीब बेसहारा लोगों के हृदय को छू सके। गोबर-मिट्टी से दूर पक्की (मेटल्ड) सड़कों पर चलने वाले लोगों को जो नाजुक और आरामदेह जिन्दगी बिताने के आदी हैं गाँवों की चिन्ता हो ही कैसे सकती है जो वहाँ के कठोर और अभावग्रस्त जीवन का मर्म समझने वाले किसी ग्रामीण को ही होगी। समय ने सिद्ध कर दिया है कि चौधरी साहब की धारणा शत-प्रतिशत सत्य साबित हुई। कांग्रेस की गाँवों के प्रति उपेक्षापूर्ण नीतियों का ही परिणाम है कि आज तीस वर्षों के बाद भी हमारी समस्यायें सुलझने के बजाय उलझती गयीं। चौधरी साहब का बहुत पहले से ही यह निश्चित विचार था कि देश की विशाल श्रम शक्ति का सदुपयोग ही हमारी समस्याओं का एक मात्र हल है। हमारे यहाँ रूस और अमेरिका के विपरीत जहाँ प्राकृतिक साधनों की प्रचुरता और श्रमशक्ति की कमी है, भूमि कम और जनसंख्या अधिक है। हमें अपने यहाँ खेती और उद्योग दोनों ही क्षेत्रों में ऐसी तकनीक अपनानी होगी जिससे भूमि की प्रति एकड़ पैदावार बढ़े और उद्योगों में प्रति इकाई लोगों को अधिक रोजगार मिले। इस नीति की उपेक्षा के कारण ही हमारे सामने गरीबी, बेरोजगारी और आर्थिक विषमता जैसी समस्यायें आज भी मौजूद हैं। देश के विकास के उपायों और नीतियों के बारे में जितना ठोस, तर्कसंगत, अनुभवपरक और स्पष्ट चिन्तन चौधरी साहब का है वह अन्य किसी में दुर्लभ है। खेती में वे बड़े फार्मों के, चाहे वह सहकारी, सरकारी, या निजी हों, विरोधी हैं। उनके विचार में भूमि का अधिकतम उपयोग करने के लिए उसकी अधिकतम और न्यूनतम सीमा निर्धारित होनी चाहिए। ऐसे ही उद्योगों के क्षेत्र में उनकी स्पष्ट मान्यता है कि उपयोग की अधिकाँश वस्तुओं का उत्पादन ग्रामीण एवं कुटीर उद्योगों द्वारा किये जाने से ग्रामीण दस्तकारों की माली हालत में सुधार होगा, जो वस्तु इनमें न बन सके उसे लघु उद्योगों द्वारा तथा जो उनमें भी न बनायी जा सके उसे बड़े उद्योगों द्वारा तैयार कराया जाये। इस प्रकार इनका उत्पादन क्षेत्र निश्चित करना होगा और ऐसा उपाय करना होगा कि बड़े उद्योग, छोटे उद्योगों पर हावी न होने पावें। ये दोनों ही उपर्युक्त विचार चौधरी साहब के ऐसे हैं जो अकाट्य है और अगर ईमानदारी से पिछले वर्षों में इन पर अमल किया गया होता तो निःसन्देह आज की अधिकाँश समस्यायें पैदा ही न हुई होतीं। अर्थ के सारे साधन, जो आज शहरों में केन्द्रित होते जा रहे हैं वे विकेन्द्रित होकर गाँवों की ओर मुड़ गये होते और आर्थिक विकेन्द्रीकरण के आधार पर राजनीतिक शक्ति के विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया सही माने में उभर आयी होती।

चौधरी साहब की सामान्य सामाजिक मान्यता शुद्ध भारतीय प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा के अनुकूल है। उन्हें जाति-पाँति, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब आदि भेदभावों की दीवारों की उचाइयाँ बाँध नहीं सकतीं। उत्तुंग हिम श्रृंखला पर, खड़े निर्विकार व्यक्ति की भाँति सामाजिक अभिशाप के सारे बन्धनों से वह बहुत ऊपर हैं, जो लोग उन्हें जातिवादी कहने का दुस्साहस करते हैं, निश्चय ही उनकी आँखें असलियत की ओर मुंदी हुई हैं अथवा वे जानबूझ कर अपना कलंक उनके सिर मढ़ने का कुचक्र रचते हैं। महर्षि दयानन्द के उद्बोधनों से प्रेरित यह सच्चा भारतीय भाग्यवाद, कर्मफल व जन्म के आधार पर जाति-पाँति की कुप्रथा को समाप्त करने के लिए सदैव तैयार रहा है और उस दिशा में निरन्तर अथक प्रयास करता रहा है और आज भी सतत् प्रयत्नशील है।

विश्व के प्रसिद्ध प्रशासकों की श्रेणी में चौधरी साहब की गणना किया जाना उचित ही है, क्योंकि प्रशासक के सारे गुण उनमें अपनी चरम सीमा पर हैं। प्रशान्त धीर स्वभाव, मितभाषिता, समय पर समुचित सावधानी के साथ प्रशासनिक कदम चौधरी साहब की अपनी विशेषता है जो भारत के बहुत कम प्रशासकों में पाई जाती है। कुछ लोग चौधरी साहब की दृढ़ता और समयोचित निर्णयों को ध्यान में रखकर उनकी तुलना सरदार बल्लभ भाई पटेल से करते हैं। किन्तु मेरा विश्वास है कि सरदार के समय की परिस्थितियाँ देशवासियों की उत्कट देशभक्ति और महात्मा गांधी के शान्तिप्रिय आदर्शों में उनकी आसक्ति उन्हें अपना कार्य पूरा करने में अत्यन्त सहायक सिद्ध हुई थी लेकिन आज तीन दशकों के बाद विश्व में राजनीतिक और आर्थिक सभी प्रकार की मान्यतायें बदल चुकी हैं और विशेषकर भारत में चरित्र ह्रास की गति तीव्र से तीव्रतर होती जा

रही है। परस्पर आस्था और विश्वास की भावना काफी घट चुकी है। जन-जन में, घर-घर में, क्षेत्र-क्षेत्र में स्वार्थ पूर्ण कलह ने आसन जमा लिया है । ऐसी स्थिति में देश की बागडोर संभालना निश्चय ही उस समय की अपेक्षा काफी दुरूह और कठिन कार्य है। इस कार्य की दुरूहता तब और बढ़ जाती है जब हम देखते हैं कि तीस वर्ष के शासन के बाद बहिष्कृत राजनीतिज्ञ देश में राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न करने के अपने योजनाबद्ध कार्य में तन्मयता से जुटे हुए हैं। सोचिये उस व्यक्ति के कलेजे की दृढ़ता जो देश व्यापी तमाम झंझावातों को झेलता हुआ अकेला, अविचल, अपने कार्य में सफलता-पूर्वक आगे बढ़ता चला जा रहा है । यह है हमारे चौधरी साहब जिन्हें बड़े से बड़ा प्रलोभन लुभा नहीं सकता, बड़े से बड़ा कष्ट डिगा नहीं सकता।

अभी कुछ महीने पूर्व देश व्यापी तानाशाही को समाप्त करने में चौधरी साहब की अप्रतिम सूझबूझ तथा जनता पार्टी के गठन में उनकी सामंजस्य बुद्धि एवं दूरदर्शिता की जितनी प्रशंसा की जाय वह थोड़ी है। कुल मिलाकर देश में दूसरी आजादी का शुभ प्रभात लाने में चौधरी साहब की भूमिका बेजोड़ थी और देश के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जायगी। जनता पार्टी सरकार के अस्तित्व में आने के पश्चात् देश के समक्ष उपस्थित समस्याओं का समाधान गृह मंत्री जी स्वयं जिस कुशलता से कर रहे है उससे आज देश में उनकी ख्याति किस प्रकार तेजी से बढ़ रही है और जनता अपनी सुरक्षा एवं न्याय पाने के अधिकार के प्रति जिस प्रकार पूर्ण रूप से आश्वस्त है उसकी अनुभूति आज देश की कोटि-कोटि जनता कर रही है।

विचारों और आचरण में नितान्त स्वच्छ जीवन के पक्षपाती तथा किसानों, गरीबों एवं दलितों के हिमायती भारत के इस महान सपूत की निरन्तर सफलता के लिए अपनी कोटि-कोटि हार्दिक शुभ कामनाएँ अर्पित करता हूँ।

●

कसौटी

'आज हमें आवश्यकता है ऐसे राष्ट्रनायक के आदर्शों की जिसकी रगों में विशुद्ध भारतीयता का पवित्र रक्त प्रवाहित हो रहा हो और जो प्रत्येक परिस्थिति में सत्य की रक्षा के लिए निर्भयतापूर्वक मृत्यु का भी वरण करने के लिए तत्पर हो, ऐसा राष्ट्रनायक जिसका कवच स्वत्वत्याग हो और जिसकी बुद्धिमत्ता ही उसका शस्त्र हो। जीवन के रणक्षेत्र में हमें किसी ऐसे ही उदात्त, वीरव्रती और साहसी योद्धा के आदर्शों का अनुकरण करने का आवश्यकता है, उस दुर्बल प्रेमी की नहीं जो जीवन को मात्र 'विलासिता का उपवन' मान बैठा हो ।

—स्वामी विवेकानन्द

●

आदर्श प्रशासक

□ जगवीर सिंह

राज्यमंत्री सूचना एवं प्रसारण
भारत सरकार

चौधरी चरण सिंह का जन्म २३ दिसम्बर, सन् १९०२ को जिला मेरठ के नूरपुर गांव में हुआ था। उनके पिता एक प्रतिष्ठित किसान थे और नूरपुर तथा भदौला आदि गाँवों में खेती करते थे। सन् १९२३ में बी०ए० और सन् १९२५ में उन्होंने एम० ए० की परीक्षा पास की। उसके बाद कानून में स्नातक की परीक्षा पास करके चौधरी चरण सिंह ने गाजियाबाद में अपनी वकालत आरम्भ की। कुछ ही वर्षों के बाद वे मेरठ चले गये और उसी को अपना कार्य क्षेत्र बनाया।

सन् १९३७ में श्री चरण सिंह सर्वप्रथम छपरौली से उत्तर प्रदेश विधान सभा के लिए चुने गये। इसी निर्वाचन क्षेत्र का उन्होंने सन् १९४६, १९५२, १९५७, १९६२ और १९६७ में प्रतिनिधित्व किया। पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त की सरकार में वे सन् १९४६ में सर्व प्रथम संसदीय सचिव बने। सन् १९५१ में वे राज्य में बिना मंत्री के पद पर नियुक्त किये गए। सन् १९५२ में जब प्रान्त में डा० सम्पूर्णा नन्द का मन्त्रिमण्डल बना तो चौधरी चरण सिंह ने राजस्व और कृषि मन्त्री का कार्य सम्भाला। श्री चन्द्रभान गुप्त और श्रीमती सुचेता कृपलानी के मंत्रिमण्डल में भी उन्होंने कृषि, परिवहन, वन और स्थानीय स्वायत्त शासन जैसे महत्वपूर्ण विभागों को सुशोभित किया। उत्तर प्रदेश में चरण सिंह जी दो बार मुख्य मन्त्री भी रहे– एक बार सन् १९६७ में संयुक्त विधायक दल के नेता के रूप में और सन् १९७० में काँग्रेस के समर्थन से।

श्री चरण सिंह पर महात्मा गाँधी, स्वामी दयानन्द और लौह पुरुष सरदार पटेल का बहुत प्रभाव है। श्री चरण सिंह एक ईमानदार और कुशल प्रशासक मेधावी संसदविद् और प्रशासन में भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार के कट्टर विरोधी हैं। वे एक व्यवहार वादी और वाकपटुता के लिये सुपरिचित हैं। उनकी राय में सरकार को अपनी नीति स्पष्ट करनी चाहिये और फिर उसका सख्ती से पालन करना चाहिये। वे मानते हैं कि नियम तोड़ने के लिए नहीं बनते और कायदे-कानून में छल-कपट के लिये स्थान नहीं होना चाहिए। उनका विचार है कि दल और अपने हित के लिये भी फैसले न बदले जायें। श्री चरण सिंह पर कभी-कभार जिद्दी होने का आरोप लगाया जाता है। वे काफी सोच समझकर कोई फैसला करते हैं और फिर उस पर दृढ़ और अटल रहते हैं। उनकी राय है कि जिस प्रशासक को गलत बात पर गुस्सा न आये वह प्रशासक ही कैसा ?

चौधरी साहब ने जहाँ भी काम किया, जो भी विभाग संभाला, वहीं अपनी ईमानदारी और प्रशासन क्षमता की अमिट छाप छोड़ी है। जब वे उत्तर प्रदेश में मुख्य मन्त्री बने, सरकारी तथा उसके बाहर के भ्रष्टाचारी तत्वों में तहलका मच गया और चुस्ती, सेवा और निष्ठा की भावना हर क्षेत्र और हर स्तर पर दृष्टिगोचर होने लगी। देश में एक सबल विपक्ष की कल्पना जिन लोगों ने की, चौधरी चरण सिंह जी उनमें अग्रणी हैं। सन् १९६९ के मध्यावधि चुनाव के पहले उन्होंने भारतीय क्रांतिदल की स्थापना की और बाद में

कुछ दलों को मिलाकर भारतीय लोक दल बनाया। जनता पार्टी की कल्पना और उसे प्रबल और लोकप्रिय शासक दल के रूप में गठित करने में जिन नेताओं ने भूमिका निभाई उनमें चौधरी चरण सिंह का स्थान किसी से पीछे नहीं। अपने व्यापक, समर्थन, लोकप्रियता के बावजूद श्री मोरार जी भाई को दल का नेता और प्रधानमन्त्री बनाने में जो प्रशासनिक सूझबूझ, दूरदृष्टि निस्पृहता और उदारता का उन्होंने उदाहरण रखा उसका सर्वत्र आदर और सराहना की गयी।

चौधरी चरण सिंह पर प्रतिक्रियावादी होने का आक्षेप किया जाता है। यह आरोप कितना बेबुनियाद है उसका प्रमाण उत्तर प्रदेश का जमीनदारी उन्मूलन विधेयक है, जो देश में इस विषय का एक आदर्श और केरल की भूमि सम्बन्धी कानून से भी अधिक प्रगतिशील माना गया है। इस विधेयक की कल्पना, निरूपण और क्रियान्वयन सभी चौधरी साहब की देखरेख में हुआ। कोर्ट वार्ड्स जैसी प्रतिक्रियावादी व्यवस्था और पटवारी जैसी भ्रष्टाचार-मूलक प्रणाली को समाप्त करने का श्रेय भी चौधरी चरण सिंह को ही है। प्रशासन में चुनौती लेना और सफलता प्राप्त करना उनकी कार्य शैली का अंग बन गया है। ग्रामीणों को राहत पहुंचाने वाले ऋण मुक्ति विधेयक को अंतिम रूप देने में चौधरी जी ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी। यह तो शायद बहुत कम लोग जानते हैं कि उन्हीं की पहल पर उत्तर प्रदेश में मंत्रियों के वेतन और अन्य सुविधाओं में भारी कटौती की गयी थी।

चौधरी साहब वास्तविक मानो में किसान नेता रहे हैं और व्यावहारिक रूप से कार्य परायण सिद्ध हुए हैं। उनकी दूरदर्शिता तथा निडरता अद्वितीय है। सहकारी खेती के विरोध में उनकी आवाज आज तक गूंजती है। दूसरी ओर चकबन्दी द्वारा कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी का श्रेय भी उन्हीं को है। ग्रामीण समस्याओं का जितना चौधरी साहब को ज्ञान है वह सराहनीय है। चौधरी साहब की अर्थ नीति को जनता पार्टी द्वारा अपनाया जाना उनके विचारों की दृढ़ता का एक नमूना है और यही अर्थनीति कार्यान्वित होने के बाद इस देश में गरीबी, बेरोजगारी और असमानता दूर करने का मूल मन्त्र साबित होगी।

केन्द्रीय गृह मन्त्री बनने के बाद चौधरी चरण सिंह ने जिस कुशलता से इसके कार्य-कलापों का संचालन किया उससे पता चलता है कि मानो मंत्रालय की लौह पुरुष सरदार पटेल के समय की गरिमा पुनः लौट आई है। अधिनायक तन्त्र और आपातकाल के दौरान हुई ज्यादतियों और कारनामों को उजागर करने और उनकी पुनरावृत्ति को सदा के लिए समाप्त कर देने के लिए जब चौधरी साहब ने जांच आयोग गठित किए, उस पर और विशेष कर उनके गठन में हुए विलम्ब पर कुछ क्षेत्रों में छीटा कसी हुई। पर जो चौधरी जी और उनकी कार्य पद्धति और विधि विधान में उनकी अटूट आस्था से परिचित हैं, वे जानते हैं कि उनका एक मात्र उद्देश्य ऐसी पक्की व्यवस्था करनी थी कि दोषी और अपराधी कानून की पकड़ से बच न निकलें और उसको अपने किए की सजा अवश्य मिले। चौधरी जी की कार्य प्रणाली की पुष्टि अर्ल आफ चैटहम के उस कथन से भी होती है जिसमें उन्होंने कहा था कि अभियोग चाहे कितना भी आधारहीन क्यों न दिखे, उसकी जाँच जरूर होनी चाहिए।

●

जिसे सत्य की सर्वव्यापक विश्व भावना का साक्षात्कार करना हो, उसे जगत के निम्नतम प्राणी को भी अपने जैसा ही प्रेम करना चाहिये।

—महात्मा गाँधी

जैसा मैंने उन्हे पाया

□ मधु दण्डवते
रेलमंत्री, भारत सरकार

लोक शक्ति को पहचानने और उसकी प्रतिष्ठा फिरसे स्थापित करने में जिन व्यक्तियों का प्रमुख हाथ रहा है, उनमें चौधरी चरणसिंह अग्रगण्य हैं। देश उनकी ७५ वीं सालगिरह मना रहा है। यह उनके लिए ही नहीं, पूरे देश के लिए गौरव की बात है। वैदिक काल से लेकर अब तक 'जीवेम शरद: शतम:' मानव-जीवन का काव्य माना जाता रहा है। 'सौ शरद ऋतुयें' जिन्हें जीने को मिलें वे परम यशस्वी और भाग्यशाली माने जाते हैं। फिर चौधरी चरण सिंह जैसे कर्मठ, कर्तव्य-परायण, दृढ़ चरित्र और निर्भीक नेता का मार्ग दर्शन सुदीर्घ काल तक मिले, यह सचमुच पूरे देश की जनता के लिए कल्याणकारी होगा।

उत्तर प्रदेश में संविद सरकार के नेता के रूप में चौधरी चरणसिंह का तेजस्वी व्यक्तित्व उत्तर प्रदेश की जनता को सम्बल प्रदान करता रहा है। सन् १९३७ में प्रदेश विधान सभा का पहली बार चुनाव जीतने के बहुत पहले चौधरी जी सक्रिय रूप से राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रवेश कर चुके थे। राजनीतिक दृष्टि से वे महात्मा गांधी को अपना गुरू मानते हैं। सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, कर्तव्य परायणता, निर्भीकता आदि उनके गुणों को अपने जीवन में उतारने का उन्होंने सफल प्रयास किया है। केन्द्र में जनता सरकार के पदस्थ होने के बाद, मेरी उनसे अक्सर मुलाकात होती रहती है। उनकी सादी वेशभूषा, कर्मठता, निश्छल स्वभाव तथा दृढ़ता मिलने वालों के मन पर उनकी अमिट छाप डालती हैं।

यह मात्र संयोग नहीं है कि वे अनुकरणीय राष्ट्रीय व्यक्तित्व के रूप में उभर कर सामने आये हैं। उनका जीवन महात्मा गाँधी और आर्यसमाज के प्रवर्तक, स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों से अभिभूत है। जातिवाद, रूढ़ि-वादिता, अस्पृश्यता-निवारण तथा ईमानदारी उनके आदर्श हैं। युवावस्था में ही उन्होने आर्यसमाज की विचारधारा को हृदयंगम कर लिया था। उनका यह दृढ़ विश्वास है कि आर्यसमाज के नियमों का पालन करके ही देश आगे बढ़ सकता है और इसी में भारतीय जनता का कल्याण निहित है।

चौधरी चरणसिंह विज्ञान के स्नातक हैं। २३ वर्ष की अवस्था में उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर उपाधि ली और वकालत की परीक्षा पास करने के बाद वकालत शुरू की। सन् १९२३ में वे मेरठ चले आये थे, जहाँ से उनके राजनीतिक जीवन की शुरुआत हुई। राष्ट्रीय आन्दोलन में उन्होंने अनेक बार जेल यात्रा की और अनेक यातनायें सहीं, लेकिन राष्ट्रीय आन्दोलन में सदा अग्रणी रहे।

सन् १९३७ में चौधरी जी पहली बार छपरौली से विधान सभा के लिए चुने गये और तब से अब तक कई चुनावों के अवसर आये। सन् १९४६, १९५२, १९६२ और १९६७ में उन्हें गोविन्द वल्लभ पन्त की सरकार में सभा सचिव नियुक्त किया गया और चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, न्याय, सूचना आदि विभागों में उन्हें अपने कार्य-कौशल को आजमाने का अवसर मिला। जनवरी सन् १९५१ में

वे उत्तर प्रदेश में कैबिनेट स्तर के मन्त्री बने और न्याय तथा सूचना विभागों का कार्य भार सँभाला। सन् १९५२ में डाक्टर सम्पूर्णानन्द के मन्त्रिमण्डल में उन्हें राजस्व और कृषि मन्त्री बनाया गया। अप्रैल सन् १९५९ में जब उन्होंने त्यागपत्र दिया तो उस समय वे राजस्व एवं परिवहन मंत्री थे। वे सन् १९६० में चन्द्रभानु गुप्त के मंत्रिमण्डल में कृषि एवं वन मंत्री थे। सन् १९६२–६३ में श्रीमती सुचेता कृपलानी के मंत्रिमण्डल में वे कृषि एवं वन मंत्री थे। सन् १९६५ में उन्होंने कृषि विभाग छोड़ दिया और सन् १९६६ से स्वायत्त शासन विभाग का कार्यभार सँभाल लिया। सन् १९६७ में वे श्री चन्द्रभानु गुप्त के मंत्रिमण्डल में शामिल हुए, लेकिन शीघ्र ही उससे अलग हो गये और उन्होंने संयुक्त विधायक दल की सरकार बनाई जो कि विरोधी पार्टियों का पहला संयुक्त मोर्चा था। संयुक्त विधायक दल सरकार उनके नेतृत्व में अप्रैल सन् १९६७ में शासन में आई और उत्तर प्रदेश की जनता को एक नई रोशनी का आभास होने लगा विरोधी दलों का यह मोर्चा उनके अनवरत प्रयत्नों के बावजूद अधिक स्थायी नहीं हो सका और उन्होंने राज्यपाल को विधान सभा भंग करने और नये चुनाव कराने की सलाह दी। यह एक दूसरा अवसर था जब चौधरी चरणसिंह ने अपनी संगठन शक्ति का परिचय दिया। उन्होंने भारतीय क्रांतिदल के नाम से एक नयी पार्टी बनाई और इसके तत्काल बाद सन् १९६९ में जो मध्यावधि चुनाव हुआ, उसमें उनकी पार्टी ने राज्य विधान सभा की ९८ सीटों पर कब्जा कर लिया। ऐसा करके चौधरी साहब ने लोगों को अचम्भे में डाल दिया और लोग उनकी प्रतिभा, सूझ-बूझ और नेतृत्व शक्ति के कायल हो गये।

कांग्रेस के विभाजन के बाद फरवरी सन् १९७० में चौधरी चरणसिंह दूसरी बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। इस बार उन्हें कांग्रेस पार्टी का भी समर्थन मिला, किन्तु २ फरवरी सन् १९७० को उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू हो गया और कुछ दिनों के लिए किसी भी पार्टी के मंत्रिमण्डल के पद भार ग्रहण करने की सम्भावनाएँ समाप्त हो गयीं। चौधरी साहब ने एक साधारण कार्यकर्त्ता से लेकर मुख्यमंत्री के ऊँचे पद पर उत्तर प्रदेश की जनता की सेवा का गौरवपूर्ण रिकार्ड स्थापित किया है। प्रशासनिक क्षमता, कार्यकुशलता और कठिन परिश्रम का उन्होंने अनुकरणीय दृष्टांत रखा है। उनकी ईमानदारी और निष्ठा आज उत्तर प्रदेश ही में नहीं बल्कि सारे देश में प्रकट है। बहुधा वे इस बात को सहन कर पाने में अपने को असमर्थ पाते हैं कि उनके अधिकारी और जनता की सेवा के लिए नियुक्त कर्मचारी बेईमान और भ्रष्ट कहे जायें। एक जमाने में उत्तर प्रदेश में उनकी ईमानदारी की इतनी धाक थी कि कोई बेईमान कर्मचारी उनके सम्मुख खड़ा होने की हिम्मत नहीं कर पाता था। राजनीति हो या आर्थिक मसला किसी में वे बेईमानी बर्दाश्त नहीं कर सकते। यह सही है कि उन्होंने अपनी अलग पार्टी बनाई, अनेक सहयोगी बनाये लेकिन ज्योंही उनकी बेईमानियाँ जाहिर हुई, वे खुद ब खुद उनसे अलग हो गये। ऐसे लोग, जो अधिकारपूर्वक कोई सिफारिश लेकर उनके पास आते हैं, उन्हें निराश होकर लौटना पड़ता है, बल्कि कभी-कभी तो फटकार भी सुननी पड़ती है।

चौधरी साहब ने अपने को किसान का बेटा कहलाने का भी पूरा-पूरा सबूत दिया है। प्रारम्भ से ही जब उन्हें अवसर मिला, उन्होंने किसानों के लाभ की बात सोची, चाहे उन्हें जमींदारी उन्मूलन का कानून बनाना पड़ा हो या चाहे कोई अन्य क्रांतिकारी कदम उठाना पड़ा हो। किसानों को कर्जों के भार से मुक्त कराने के लिए उन्होंने सबसे पहली कोशिश सन् १९३९ में की थी, जिससे लाखों किसानों को राहत मिली। जब उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलन अधिनियम के लिए कार्रवाई शुरू हुइ तो उसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभायी चौधरी चरण सिंह ने। उन्हें प्रदेश के लाखों किसानों की गरीबी और खेती की परेशानियों की जानकारी थी और जब जमींदारी उन्मूलन कानून के माध्यम से किसानों को उनकी काश्तकारी के अधिकार दिए गये तो प्रदेश में एक क्रांति-सी आ गयी। किसान जोतों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी काश्त करते हुए भी उस जमीन के टुकड़े के मालिक नहीं थे, वे चौधरी साहब की दृढ़तापूर्ण कार्रवाई के फलस्वरूप एक दिन उनके स्वामी बन गये। अंग्रेजों के जाने के बाद पहली बार उन्होंने आजादी की सांस ली। किसानों के छोटे-छोटे झोंपड़े, जो छोटे-बड़े जमींदारों की मल्कियत थे और किसी समय वे बेदखल किये जा सकते थे, इस खतरे से हमेशा के लिए बच गये और भूमिहीन किसान अपने

घर और जमीन के सही माने में मालिक बने।

चौधरी चरणसिंह के सामाजिक जीवन की शुरूआत गाँव के अंचल से हुई और इसीलिए शायद धरती का मोह उन्हें बार-बार अपनी ओर खींचता है। वे उस धरती को और उसकी महिमा को कभी छोड़ नहीं पाये। देश में ऐसे नेता कम हैं, जिनकी अच्छाई, इमानदारी और निष्ठा की छाप गांव-गाँव के लोगों पर पड़ी हो। किन्तु अगर किसी को चौधरी चरणसिंह के दर्शन मिले तो, पायेंगे कि वे किसानों से बड़ी आत्मीयता से मिलते हैं, उनसे बातें करते हैं और अपनी बात सुनाने के लिए घंटों बैठाये रह सकते हैं। वे जानते हैं कि गांव का आदमी कौन सी भाषा समझता है और फिर उसी के अनुरूप अपनी बात उसके मन में उतारते चले जाते हैं। उनमें धैर्य भी असीम है। झुंड के झुंड किसान अपना प्रार्थना पत्र लिये, उन्हें घेर लेंगे और वे उनसे सहज विनोद वार्ता करते हुए उनका आवेदन-पत्र लेने के लिए स्वयं हाथ बढ़ा देंगे। जिन्दगी की इस लम्बी दूरी में भी चौधरी साहब वास्तविकता से कभी दूर नहीं हुए, उससे उन्होंने मुँह नहीं मोड़ा, बल्कि जब अवसर मिला हो उसका सामना किया और अपनी राह बनायी है।

चौधरी चरणसिंह में गजब का आत्म विश्वास और संगठन शक्ति है। उन्होंने कभी दल-बदल को बढ़ावा नहीं दिया, बल्कि नये दल बनाते और तोड़ते रहे। भारतीय क्रांति दल के बाद उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर विरोधी पार्टियों का नया संगठन भारतीय लोक दल गठित किया और जब एक दिन आपातस्थिति और इसके बाद नेताओं की रिहाई के साथ आम चुनाव की जो घोषणा की गयी, जनता पार्टी एक नयी पार्टी राष्ट्रीय स्तर पर उभरी और निश्चित रूप से इसे जन आकांक्षाओं का मूर्त स्वरूप देने में चौधरी साहब का योगदान सराहनीय रहा। उस समय जब विरोधी नेता जेलों से निकल कर खुली हवा में आये ही थे, उन्हें यह महसूस हुआ कि अब जनता तैयार है और हमें शासन की बागडोर हाथ में लेनी चाहिए। उनके इस अटूट विश्वास की परिणति चुनाव परिणामों में हुई, जिसकी कल्पना राजनीति के दिग्गजों ने भी शायद न की होगी।

चौधरी साहब सरल प्रकृति के और सादा जीवन बिताने वाले व्यक्ति हैं। उनकी यह सादगी उनके हर काम में दिखाई पड़ती है। अब वे भारत के गृह मंत्री हैं और अब भी वे इस लक्ष्य से विचलित नहीं हुए हैं। उनकी पैनी नजरों में निरर्थक खर्चे तुरन्त खटक जाते हैं और वे बिना बोले नहीं रह पाते हैं। उन्हें अध्ययन एवं पठन-पाठन में विशेष रुचि है। कई पुस्तकें उन्होंने लिखी हैं। जमींदारी उन्मूलन, सहकारी खेती, भारत की गरीबी और उसका हल, कृषि स्वामित्व या मजदूर की भूमि और एक न्यूनतम सीमा से नीचे कृषि जोतों के विभाजन की रोक-थाम, उनके चिन्तन के मूर्त आकार में भारतीय किसानों और मजदूरों के लिए लिखी गयी है।

आज भी लोगों को भूला नहीं होगा कि जब देश के प्रथम प्रधान मंत्री, जवाहर लाल नेहरू अपनी पूरी शक्ति से सत्तारूढ़ थे, तब कांग्रेस कार्य समिति में यह प्रस्ताव उठा कि भारत में खेती का भविष्य क्या है? चौधरी साहब ने सहकारी खेती के प्रस्ताव को तार-तार करके रख दिया और नेहरू जी के विचार से सर्वथा भिन्न विचारों को निःसंकोच व्यक्त किया। यह बात दूसरी है कि इसके फल-स्वरूप उन्हें नेहरू जी का कोपभाजन बनना पड़ा। लेकिन चौधरी साहब अपने विचारों पर दृढ़ रहे और इतना ही नहीं उन्होंने किसी की नाराजगी की फिक्र किये बिना उन्हें समय-समय पर व्यक्त किया, गोपनीय नहीं रखा। ऐसे अनेक अवसर राजनीति के दौर में आये हैं, जब उन्हें अपने सहयोगियों का विरोध करना पड़ता है, संघर्ष करना पड़ता है और मुसीबतें भी उठानी पड़ती हैं।

एक बार की बात है कि जब वे मंत्री पद से त्याग पत्र देकर मेरठ वापस जा रहे थे, उनके पास एक अच्छी गाय थी, जिसे वे किसी सुपात्र को देना चाहते थे किन्तु गाय बेचना उनके जीवन की मान्यताओं के विपरीत था। अंत में गाय लेने वाला एक सुपात्र उन्हें मिल गया। उसे गाय सौंपकर वे निश्चिन्त हुए। इस छोटी सी घटना से चौधरी साहब का वह मानवीय पक्ष उजागर होता है, जो प्राणी-मात्र के प्रति अपनत्व की भावना से परिपूर्ण है। अपने इस मानवीय दृष्टिकोण के कारण ही वे अपने विचारों और आदर्शों पर अविचलित रहते हैं।